

आमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

फरवरी - I - 2023



अंक - 21

माउण्ट आबू

Rs.-12

माउण्ट आबू के दो दिवसीय दौरे पर राष्ट्रपति ने 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय' का किया शुभारंभ



शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर जो अध्यात्म-शक्ति प्राप्त होती है उसका ज्वलंत उदाहरण यह

है कि एक समय में स्वयं अंधकारमय जीवन की ओर अग्रसर हो गयी थी। फिर मेडिटेशन और ध्यान योग के माध्यम से

मुख्य धारा में लौटी। उक्त उद्गार भारत की राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन में



पाण्डव भवन 'शांति स्तम्भ' पर परमात्म स्मृति में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी।

दूसरे दिन...

संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू के हिस्ट्री हॉल का अवलोकन करते हुए माननीय राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू

दूसरे दिन राष्ट्रपति मुर्मू माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारीज संस्थान के ज्ञान सरोवर अकादमी में पहुंचीं। ब्रह्ममुहूर्त में सुबह 3:30 बजे उठीं और करीब 4:30 बजे तक मेडिटेशन किया। राष्ट्रपति ने

जीवन में समय से पहले कुछ नहीं मिलता। समय आने पर ही सब मिलता है। आज भी पहले की तरह रोज मेडिटेशन के साथ सुबह की शुरुआत होती है। अपने दो दिन के प्रवास के

दौरान राष्ट्रपति ने ध्यान, साधना, एकांत और सात्विक भोजन को विशेष तरजीह दी। तत्पश्चात् राष्ट्रपति नाश्ते के बाद सुबह 10 बजे संस्थान के पांडव भवन परिसर में पहुंचीं। जहाँ ब्रह्मा बाबा के

'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' थीम के तहत आयोजित 'आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय' सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेकों संस्थान कार्यरत हैं लेकिन ब्रह्माकुमारीज एक ऐसा संस्थान है जो बहनों द्वारा संचालित किया जाता है। संस्थान में वरिष्ठ भाइयों का भी सहयोग रहता है। इस संस्थान की सफलता यह सिद्ध करती है कि अवसर मिलने पर महिलायें भी पुरुषों से बेहतर कार्य कर सकती हैं।

है। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने बालिका शिक्षा एवं महिला अत्याचार पर भी अपना संक्षिप्त उद्बोधन दिया।

अध्यात्म और विज्ञान के बीच समन्वय होना ज़रूरी

भारत को सुपर पावर बनाने के लिए अध्यात्म और विज्ञान का सहयोग ज़रूरी है। आज हमारा देश अपनी रक्षा के साथ पूरे विश्व में शांति के लिए प्रयास कर रहा है। शिव बाबा ने यहाँ मुझे बुलाया और मैं आयी हूँ। मैं ब्रह्मा बाबा को नमन करती हूँ और धन्यवाद देती हूँ कि पूरे विश्व में शांति और शक्ति प्रदान करने के लिए महिलाओं के सिर पर ज्ञान-कलश रखा।

137 देशों में संचालन कर रही महिलायें



शांतिवन 'अव्यक्त लोक' पर शांति की मुद्रा में राष्ट्रपति मुर्मू। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी एवं ब्र.कु. नीलू दीदी।

आज यह संस्थान विश्व के 137 देशों में पाँच हज़ार सेवाकेंद्रों का संचालन कर रहा है। यह संस्थान महिलाओं द्वारा संचालित विश्व का सबसे बड़ा संस्थान

सतयुग की मानसिकता को अपनाने पर जोर

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि युद्ध और कलह के वातावरण में विश्व - शेष पेज 3 पर...



मेडिटेशन के बाद सुबह 7 बजे आध्यात्मिक सत्संग में भी भाग लिया, जो 7:45 तक चला। इस दौरान राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे ऐसा महसूस होता है कि मुश्किलों के दौर में परमात्मा मेरी मदद करते हैं। जीवन में उतार-चढ़ाव के दौर में परमात्मा ने कभी मुझे कमजोर नहीं पड़ने दिया। उन्होंने कहा कि हमें



बाबा के कमरे में मेडिटेशन करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू।

शांति स्तम्भ पर पहुँच कर पुष्पांजलि अर्पित की। साथ ही मेडिटेशन रूम, बाबा की कुटिया, बाबा के कमरे में पहुंचकर एकांत में कुछ देर शिव बाबा का ध्यान किया। हिस्ट्री हॉल में संस्थान के इतिहास को जाना। पांडव भवन में अवलोकन के बाद राष्ट्रपति ने ज्ञान सरोवर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

योगानंद के लिए इमेजिनेशन पॉवर को बढ़ाये

आत्मा में सोचने की, निर्णय करने की और व्यक्त करने की योग्यता सदा होती है। अगर योग में हमें नया-नया अनुभव नहीं हो रहा है और हम आगे नहीं बढ़ रहे हैं, हम योग की गहराई में गोते नहीं लगा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि हम अभी तक इसी दुनिया में हैं, सिर्फ हम योग-योग कह रहे हैं परंतु करते नहीं हैं। जहाँ हमें जाना चाहिए वहाँ नहीं जा रहे हैं और जो करना चाहिए वो नहीं कर रहे हैं। इसका एक कारण यह है कि हम जिसके साथ योग लगाना चाहते हैं और जिस स्थान को याद करना चाहिए उसका चित्रण नहीं करते। अगर हम परमधाम में बाबा को याद करना चाहते हैं तो पहले उस परमधाम का चित्रण मन में निर्मित करना चाहिए, उसमें बाबा (परमपिता शिव परमात्मा) का चित्रण करना चाहिए। क्योंकि बाबा को या घर को हम इन स्थूल आँखों से तो देख ही नहीं सकते। उनको तो मन की आँख अथवा बुद्धि के नेत्र से देख सकेंगे। इसका चित्र पहले हम अपने मन में निर्मित करें और उसको देखते रहें। इसको ही चित्रण अर्थात् इमेजिनेशन कहते हैं। इमेज अर्थात् चित्र। इमेजिनेशन माना चित्रण करना, चित्र बनाना। इमेजिनेशन का अर्थ कल्पना करना नहीं है, अन्दाजा लगाना नहीं है। इमेजिनेशन माना मन में किसी वस्तु या व्यक्ति का चित्र बनाना। कई लोगों को तो चित्रण करना आता ही नहीं है। क्यों नहीं कर सकते? क्योंकि मन में लीकेज है, योग में व्यर्थ संकल्पों के विघ्न आते हैं। इसके अलावा वे दूसरों को कई तरह के दुःख देते रहते हैं, उन्हें सताते रहते हैं। दूसरों को देख ईर्ष्या करते रहते हैं, उन्हें आगे बढ़ने नहीं देते, कुछ-न-कुछ बाधा डालकर उन्हें तंग करते रहते हैं। इसलिए वे न योग में चित्रण कर सकते हैं और न योग लगा सकते हैं। मन में ऐसे खराब विचार, भावनायें होने के कारण वे चित्रण नहीं कर सकते। हमारा इमेजिनेशन हमारे संकल्पों से बँधा हुआ है। अगर आपको योग में अच्छे-से-अच्छे अनुभव करने हैं तो इन सब चीजों को छोड़ दीजिये। दूसरों के बारे सोचना बंद कर दीजिये। वो कुछ भी करें, अपने कर्मों के लिए वो ही जिम्मेवार हैं, हम काहे को झंझट में पड़ें? एक जगह तो ऐसी है जहाँ न्याय होता है। हम काहे की चिंता करें? हम अपना काम करें। हम क्यों दूसरों को देखें? योग में अच्छे अनुभव होने के लिए डिटेचमेंट धारण करो कि मेरा कुछ भी नहीं, सब-कुछ बाबा का है, बाबा का दिया हुआ है। तब देखो योग-अग्नि धधकेगी, प्रज्वलित होगी।



डॉ. क. गंगाधर

योगानंद के लिए मन की स्थिरता चाहिए और प्रेरणा शक्ति अर्थात् प्रेरित होने की कला भी। रूखे-सूखे से काम नहीं चलेगा। जब तक प्रेरित नहीं होंगे कि मुझे योग में आनन्द, लाइट और माइट का अनुभव करना है, अपनी मंजिल पर पहुँचना है, सिद्धि प्राप्त करनी है तब तक आप योग में अनुभव नहीं कर सकते। जितना हम प्रेरित होंगे उतना हमारे योग की गुणवत्ता भी श्रेष्ठ होगी। अनुभव हमेशा प्रेरणाओं और भावनाओं के आधार से होते हैं। अगर आपमें भावनायें नहीं हैं, प्रेरणायें नहीं हैं तो अनुभव नहीं होगा। चलती-फिरती लाश को अनुभव नहीं होता, जिन्दा-दिल आदमी को अनुभव होगा। इसलिए हमारे जीवन में प्रेरणायें होनी चाहिए। जो भी महान् पुरुष बने हैं, वीर-शूर बने हैं वे प्रेरित थे, प्रेरणा के कारण उनमें समाज-कल्याण की या देश प्रेम की भावनायें जाग्रत हुईं। तब जाकर उन्होंने महान् कार्य किये। प्रेरणा और भावनाओं से व्यक्ति कर्तव्य-उन्मुख हो जाता है, नहीं तो वह किकर्तव्य विमूढ़ हो जाता है। किकर्तव्य विमूढ़ माना उसको यह समझ नहीं है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। इसमें वह विमूढ़ है। रोज उसके मन में प्रश्न उठेंगे कि यह करना है या नहीं करना है। यह पैसे यज्ञ में लगाऊँ या न लगाऊँ? बाबा के लिए जमीन व मकान दूँ या न दूँ? - यह दुविधा उसके मन में नाचती रहती है। अगर आप ऊँचे स्तर का जीवन जीना चाहते हैं तो आपका ऊँची, उदात्त प्रेरणाओं से, भावनाओं से प्रेरित होना बहुत जरूरी है।

सदा खुश रहने की साधना व साधन है पवित्र संकल्प

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

इंसान बहुत जल्दी संग के रंग में अन्धकार में आ जाता है। पवित्रता क्या है, उसे यह पता ही नहीं है। अपवित्रता क्या है? पता नहीं है क्योंकि कलियुगी अन्धियारा है। पवित्र इतने बनें जो हमारे पाप कटें, पुण्य आत्मा बनें। इतना पवित्रता का बल चाहिए। जैसे कोई-कोई कीड़ा अच्छे को भी खराब कर देता है और भ्रमरी बुरे को अच्छा बना देती है। तो कभी किसी को बुरा देखना यह भ्रमरी का काम नहीं है, ब्राह्मणी का काम नहीं है। बदलना उसका काम है, औरों को बदलने में मदद करना उसका काम है। हमारे पास इतनी शुभ भावना शुभ कामना हो जो हमारे लिए अगर कोई अशुभ सोचे तो भी वो हमें लगेगा नहीं क्योंकि हरक के लिए शुभ भावना का भण्डार भरपूर है।

हमारे प्रति कोई कैसे भी सोचता है, आपेही ठीक हो जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है, पर हम अपनी शुभ भावना में कोई कमी नहीं करेंगे। यह हमारे लिए शान नहीं है। शान यह है हम अपनी भावनाओं को सदैव सबके लिए बाबा जैसी शुभ बनायें। सबके प्रति श्रेष्ठ कामना हो, कोई स्वार्थ न हो। वह आत्मा जैसे बाबा की दृष्टि से बदल जाए, यह कामना है। बाकी हम क्या दृष्टि देंगे। जैसे बाबा दृष्टि देता है तो तुम बाबा से दृष्टि लो- यह भावना है। हम दृष्टि नहीं देंगे, जैसे बाबा मेरे को दृष्टि से चला रहा है, ऐसे आप भी बाबा की दृष्टि में रहो तो आपके ऊपर किसकी नजर नहीं पड़ेगी। न आपकी नजर औरों पर पड़ेगी।

अगर भोजन पर किसी की खराब नजर पड़ जाती है तो वह खाना हम नहीं खा सकते क्योंकि उसमें इच्छा होगी, कोई भी निर्गटिविटी होगी तो उसका प्रभाव शरीर को बीमार कर देगा इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं बच्चे भोजन का भोग लगाके फिर खाओ और पहले सब खायें, फिर

तुम खाओ, यह सभ्यता भी यहाँ बाबा सिखा रहे हैं। ऐसे नहीं मैं खा लूँ और किसी की इच्छा हो खाने की, वो खाना अन्दर नहीं जायेगा, जायेगा तो भी हज़म नहीं होगा। तो हम खाऊँ, हमको मिलें... नहीं, सबको मिलें, सब खायें।

मुझे अन्दर से सच्ची दिल से साहेब को राजी रखने का पुरुषार्थ करना है। साहेब तब राजी होता है, जब हम उनके डायरेक्शन, उनकी श्रीमत, उनके इशारे प्रमाण चलते हैं। तो हमारी बुद्धि में क्लीयर डायरेक्शन हों, तब हम टाइम पर सबकुछ कर सकेंगे। दूसरे का भी टाइम बचाए, उसको मदद कर सकते हैं तो इतना तो सीखना पड़ेगा।

आजकल बाबा हर बात में कहता है- विघ्न-विनाशक बनने की डिग्री पास करो। विघ्न आवे ही नहीं, आया तो यह खेल है, क्या बड़ी बात है। खेल में खेल तो होता ही है। पर खेल समझ करके खुश रहें। उदास न रहें, थोड़ी उदासी आई माना ड्रामा का ज्ञान नहीं है, अपवित्रता आई। अपवित्रता ने उदासी लाई तो मेरी खुशी कम कर दी। भगवान मुझे खुशी देवे, तो सदा खुश रहने की साधना व साधन है पवित्र संकल्प। तो अपने संकल्प को चेक करो, अपने ऊपर मेहर करके किसी के भी भाव-स्वभाव में नहीं आओ।

यह अच्छा है, यह खराब है...यह भी अपवित्र संकल्प है, जिसने जिसको अच्छा कहा वो उसके ऊपर आशिक है और उसने समझा हों यही मुझे अच्छा समझते हैं तो वो हुआ आशिक, तो उन दोनों का माशूक छूट गया। अपने आपको जरा ऊपर से बाबा की तरह देखो तो लगेगा कि यह दोनों आपस में आकर आशिक हो गये हैं। सबका माशूक वो रह गया, उन जैसा अच्छा कोई नहीं, यह भूल गया। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं तो इतनी ही पवित्रता बाबा हमारे से चाहता है।

संकल्प ऐसे हों जो स्व और सेवा दोनों इक्वेट हो जायें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

त्याग वृत्ति से अनासक्त वृत्ति होती है और त्याग वृत्ति, वैराग्य वृत्ति से होती है। अनासक्त वृत्ति, श्रेष्ठ वृत्ति फिर उपराम बनता है, यह स्टेप्स हैं। जरा भी वैराग्य कम है, कोई हद के व्यक्ति, वैभव से राग है, तो न त्याग है, न तपस्या है। सेवा भले है।

अन्त समय साक्षात्कार किसका होगा? त्याग, तपस्या मूर्ति का होगा। भक्ति में पहले लाइट आती है, तब साक्षात्कार होता है, लाइट पहले देह से अलग कर देती है, फिर साक्षात्कार होता है।

एक भाई बहुत भक्त था, उसने न भजन गाया, न पूजा पाठ किया पर शकल चमक रही थी। वह मेरे बाप समान था। मैंने कहा आपने भजन भी नहीं किया, कुछ भी नहीं किया, तो आपने क्या किया? चेहरा ऐसा कैसे चमक रहा है। कहा मैं सुबह को उठकर विष्णु का ध्यान करता हूँ, भक्ति हो तो ऐसी। न हवन, न पाठ, न पूजा कुछ नहीं किया।

बाबा शिक्षा, समझानी, सावधानी हर मुरली में देता है। कोई मुरली ऐसी नहीं होती जिसमें शिक्षा, समझानी, सावधानी न हो। बाबा की कई बातें दृश्य रूप में सामने आती हैं, बच्ची तुम यह नहीं कर सकती हो। जी बाबा। बाबा

साधारणता में नहीं ले आना चाहता है, महान आत्मा बनाने चाहता है।

बाबा के पहले-पहले बोल हैं- सी फादर, फॉलो फादर। सारे यज्ञ की हिस्ट्री में एक क्षण, पल भी निष्फल होने नहीं दिया है। सी फादर और फॉलो फादर किया है। बाबा ने कहा लाइट रहो, माइट खींचते रहो, तो ऑटोमेटिक फरिश्ता रूप नजर आयेगा, अपने को फीलिंग आयेगी, धरती पर पांव नहीं हैं। उड़ती कला है। चढ़ती कला का समय पूरा हो गया। चढ़ती कला में थकावट होती है तो थोड़ा रूक जाते हैं। यह भी अपनी स्थिति में, चार्ट में देखें। थोड़ी भी थकावट मन में हुई सो तन पर आई। मन में क्यों आई? कई प्रकार के संकल्पों से आई। अभी बाबा बोले व्यर्थ संकल्पों को खत्म करो, व्यर्थ संकल्प हमको क्यों आयें! संकल्प से सेवा हो रही है, संकल्प ऐसे हों जो स्व और सेवा दोनों इक्वेट हो जायें। संकल्प में स्व, स्व में बाबा है, उसमें सेवा समाई पड़ी है। इतना ध्यान अपने ऊपर रखेंगे तो बाबा साथी बनकर, साक्षी होकर प्ले करने में मदद करेगा। याद करने की मेहनत नहीं है, पर बाबा के साथ का अनुभव औरों को सुख देता है। मेरे में जो कमी कमजोरी है वह मर्ज हो जाए, जो मेरा साथी है, वह दिखाई दे।

बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है-एक दो तो दस पाओ

हम एक तरफ राजर्षि हैं, दूसरे तरफ संगम के सिंहासन पर बैठने वाली महारानियाँ। बाबा ने कहा है कि भविष्य के सिंहासन पर तो राजा-रानी बैठेंगे लेकिन मेरा दिल तख्त इतना विशाल है जो मेरे इस दिल तख्त पर सभी बच्चे बैठ सकते हैं, जिसने इस संगम पर सिंहासन जीत लिया उसने विश्व का सिंहासन जीत लिया। तो हरेक अपने दिल से पूछे कि मैंने दिलाराम के दिल का सिंहासन जीत लिया है? दिखाते हैं लव-कुश ने राम को जीता। यह भी हमारे सामने एक दृष्टान्त है। हम बच्चों ने दिलाराम के दिल तख्त को जीता है। दिलाराम बाप की दी हुई सेवा पर दिल से तत्पर हैं। दिल भी हमारी बुद्धि के अन्दर आती। जैसे प्राण माना आत्मा, वैसे दिल माना आत्मा।

गीता के महावाक्य हैं- "नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप"। मेरा यह सवाल उठता नष्टोमोहा बन सर्विस पर आये हैं या नष्टोमोहा बनने सर्विस पर आये हैं? स्मृति-स्वरूप बनकर मैंने सोचा यह पुरानी दुनिया क्या है, ये जीवन क्या है, इसमें मोह क्या रखें? ऐसा समझकर

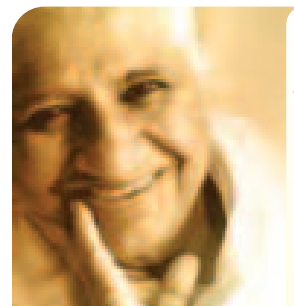
आये या मोह नष्ट करने के लिए आये? मैंने स्मृति स्वरूप होकर स्वयं को सेवा में लगाया है, माना ज्ञान स्वरूप होकर सेवा में लगे हैं। उनके साथ ही अपने सर्व सम्बन्ध, माता, पिता, बन्धु... आदि सब हैं। बाबा कहने से बाबा के गुण, शक्ति, सारी महिमा सामने आ

भक्ति मार्ग में सिर झुकाते हैं, दण्डवत प्रणाम करते हैं, माना पूरा ही समर्पण करते हैं। तो स्वयं से पूछो- मैं पूरी झुकी हूँ अर्थात् पूरा समर्पित हूँ?

वरदान तब मिलता है जब पूरा दान करते हैं, बाबा ने ईश्वरीय अनादि नियम बनाया है, एक दो तो दस पाओ, धरती

है। ज्ञान का, शक्ति का, गुणों का, यह खजाना तुम बांटते हो। जितना-जितना औरों को बांटते उतना स्वयं भी भरपूर होते हैं। एक दिया 100 पाया। इतना जमा होता है, जिसे कहते हैं वरदान मिलता है। तो बाबा हमें दान देकर फिर हमसे दान कराता है। फिर वह और ही 100 गुणा भरतू होता है। तो जो भरतू होता है वह है वरदान।

जैसे किसी गरीब को दान दिया उसने सिगरेट पी लिया तो हमारे ऊपर बोझ बढ़ा, इसी तरह बाबा ने मुझे दान दिया और मैंने बाबा के मिले दान का उपयोग अगर ठीक नहीं किया तो वरदान की बजाए श्राप हो जाता है। यह निर्णय शक्ति चाहिए। मान लो हमने किसको मुरली सुनाई, ज्ञान दिया, बाबा की याद का अनुभव कराया, जिससे आत्मा को बड़ी खुशी हुई, उसने हमें दुआ दी, यहाँ तक तो ठीक, लेकिन जब मैंने कहा ये मेरे से बहुत प्रभावित हुआ, बहुत खुश हो गया, तो यह जमा नहीं किया, स्वीकार कर गंवा दिया। अहम भाव आया तो बैलेन्स बराबर। जो जमा किया वह माइन्स हो गया, खत्म हो गया।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जाती है। बाप भगवान है माना नॉलेजफुल है, सर्वशक्तिवान है अर्थात् सर्वशक्तियों का वर्सा देने वाला है। ऐसे बाबा को सर्व सम्बन्धों से जानकर, सोच-समझकर मैं समर्पित हुई हूँ या पांव देते, तुम सब मुझ शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता

को एक दाना देते हैं तो 100 देती है, अब पूछो मैं पूरा दानी बना हूँ? भक्ति में भी ईश्वर अर्पणम या कृष्ण अर्पणम करते हैं, तुम किसी मनुष्य को दान नहीं देते, तुम सब मुझ शिवबाबा को दान करते हो तब मेरे से तुम्हें वरदान मिलता



माउण्ट आबू-ज्ञान सरोवर। माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के साथ ज्ञान सरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, राजयोगी ब्र.कु. नजंप्पा, ब्र.कु. गोलू, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. सुभाष तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों।



पौधारोपण करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू।



द्रौपदी मुर्मू को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय तथा ब्र.कु. लीना।

- पेज 1 का शेष...

‘आध्यात्मिक सशक्तिकरण...

समुदाय के समाधान के लिए भारत की ओर देख रहा है। हमें कलियुग की मानसिकता को खत्म करना होगा और सतयुग की मानसिकता का आह्वान करना होगा। इसके लिए हम सबको मन में सत्वगुण को अपनाने का प्रयास करना होगा। दया और करुणा की भावना भारतवासियों के जीवन-मूल्यों में है। माउण्ट आबू से शुरू हुआ ये अभियान समस्त समाज को सशक्त बनाने में संबल प्रदान करेगा।

विज्ञान और अध्यात्म के जरिए विश्व में शांति स्थापन करें

राष्ट्रपति ने कहा कि इस धरती पर प्रत्येक मनुष्य मानसिक शांति के लिए प्रयास कर रहा है चाहे वो किसी देश, जाति, संप्रदाय का हो। शांति भी भोजन की तरह आवश्यक है। ब्रह्माकुमारीज शांति और आनंद के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहा है। अध्यात्म ही वो प्रकाश पुंज है जो पूरी मानवता को सही राह दिखा सकता है। मेरा मानना है कि अमृत काल

में 2047 के स्वर्णिम भारत के लिए आगे बढ़ते हुए हमारे देश को विश्व शांति के लिए विज्ञान और अध्यात्म दोनों का उपयोग करना होगा। हमारा लक्ष्य है कि भारत एक नॉलेज सुपर पावर बने। हमारी आकांक्षा है कि इस नॉलेज का उपयोग सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए हो। सौहार्द महिलाओं और वंचित वर्ग के उत्थान के लिए हो, युवाओं के विकास, विश्व में स्थाई शांति की स्थापना के लिए हो। उन्होंने कहा कि भारत इस समय जी-21 की अध्यक्षता कर रहा है जिसका थीम है “वसुधैव कुटुम्बकम्” यानी ‘वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर’। अपनी संस्कृति के आधार पर हमारा देश आध्यात्मिकता और नैतिकता के निर्माण के लिए सक्रिय है। बुद्ध, महावीर आदि शंकराचार्य और संत कबीर, महात्मा गांधी जी की शिक्षाओं ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है।

ब्रह्मा बाबा ने महिलाओं की शक्तियों को पहचाना और विश्व शांति की बागडोर थमाई

ब्रह्मा बाबा ने जिस सोच के साथ महिलाओं को अग्रणी भूमिका दी, इसी तरह विश्व समुदाय को भी महिलाओं को आगे बढ़ाने की जरूरत है। अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के साथ-साथ भारत शांति के अग्रदूत की भी भूमिका निभा रहा है। माउंट आबू से शुरू यह क्रांति देश के लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाएगा। माउंट आबू से जाकर बहनें पूरे विश्व में लोगों के अंदर विराजित शक्ति को पहचानने, सशक्त बनाने, ज्ञान देने और जागरूक करने का कार्य कर रही हैं। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा, कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने भी संबोधित किया। राष्ट्रपति के मानपुर एयर स्ट्रिप पर पहुंचने पर सांसद देवजी पटेल, राज्य सरकार के प्रतिनिधि शिक्षा साहित्य पुरातत्व एवं कला मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, विधायक संयम लोढ़ा, जगसीराम कोली, समाराम गरसिया व वरिष्ठ ब्र.कु. भाई-बहनों समेत कई लोगों ने स्वागत किया।

कुमार जीवन कमाल का जीवन...!!!

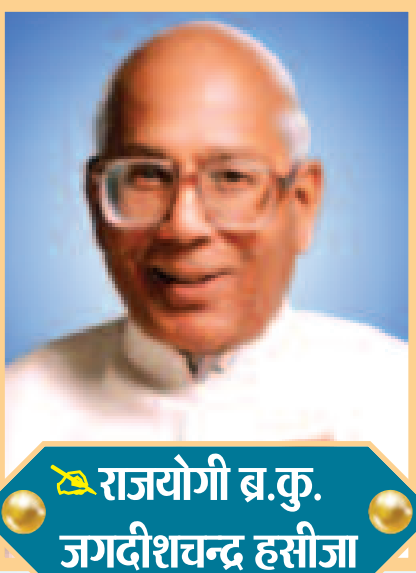
हमने सुना है, पढ़ा है, स्टूडेंट लाइफ इज द गोल्डन लाइफ। पर उसमें भी हमारा जीवन बालब्रह्मचारी जीवन हो तो सोने पे सुहागा है। क्योंकि बालब्रह्मचारी जीवन होना इस जीवन का एक श्रेष्ठतम चिन्ह है। यह हमारी अनमोल निधि है। हमारा परम सौभाग्य है कि कुमार जीवन में हमें ईश्वरीय सानिध्य प्राप्त है। जिसकी सराहना स्वयं शिव बाबा ने प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद द्वारा की है। ऐसे जीवन में हमारे अन्दर उत्पन्न होने वाले हर सृजनात्मक संकल्प सही दिशा में हों तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं। पहचानें इस अनमोल निधि को...

गीत की लाइन है ना कि “बाबा तुम्हारी शिक्षायें सदा हैं संग हमारे...” लेकिन प्रश्न यह आता है कि इस विद्यार्थी जीवन में जब हम आगे बढ़ते हैं, तो कुछ अनुभव पाने के बाद वह शिक्षा सामने नहीं आती, भूल जाती है। अगर वो शिक्षा सदा हमारे संग रह जाये तो वह हमें फरिश्ता बनाने वाली, अव्यक्त स्थिति में ले जाने वाली है। वह शिक्षा इतनी शक्तिशाली है, इतनी महान है कि पुराने जीवन को मुड़कर कभी नहीं देखेंगे और उसकी कभी याद आयेगी भी नहीं, लेकिन 63 जन्मों के पुराने संस्कार जो पड़े हुए हैं, वो सबसे पहले आक्रमण करते हैं कि वह शिक्षा सामने न आये।

यह जो कुमार जीवन है, इसकी कितनी महिमा है! कुमार जीवन है ही विद्यार्थी जीवन। शिक्षा को सदा संग रखने वाला जीवन। हमें याद आता है कि बाबा किस प्रकार बार-बार इस जीवन की महिमा करते थे! कई दफा बाबा, मम्मा से तुलना करते हुए कहते, देखो, मम्मा, बाबा से आगे है। फिर उदाहरण देते हुए बाबा कहते कि देखो, मम्मा ने वो सीढ़ी उतरी नहीं, बाबा सीढ़ी उतरा है और उनको चढ़ना पड़ता है। बाबा की भाषा तो आप समझते ही हैं, इसका अर्थ आप समझ ही गये होंगे। बालब्रह्मचारी होना इस जीवन का एक श्रेष्ठतम चिन्ह है। यह हमारी अनमोल निधि है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि कुमार जीवन में हम

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आ गये जिसकी सराहना स्वयं शिवबाबा ने ब्रह्मा के मुखारविन्द द्वारा की। भगवान भी इस जीवन की महिमा करता है कि ‘गॉडली स्टूडेंट लाइफ इज द बेस्ट लाइफ’ (ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन सर्वोत्तम जीवन है)। स्टूडेंट लाइफ में भी यह जो बालब्रह्मचारी जीवन है, उससे श्रेष्ठ और कोई जीवन है ही नहीं। यह है हमारे जीवन की प्लस प्वाइंट, एक जबरदस्त सहायक प्वाइंट है। लेकिन जैसे एक सीढ़ी होती है, उससे चढ़ा भी जा सकता है और उतरा भी जा सकता है। वह दोनों कामों के लिए इस्तेमाल हो सकती है। यह जो हमारा कुमार जीवन है, इसमें एक मुख्य बात है एनर्जी ग्रोथ। हम विज्ञान में पढ़ते हैं, डॉक्टरों में भी बताते हैं कि इस जीवन का विशेष एक चिन्ह है, विशेष एक लक्षण है विकास होना। वे कहते हैं कि शरीर का विकास होता है। बचपन और जवानी में यही अन्तर है, जवानी में शरीर का विकास होता, ग्रंथियों का विकास होता है जिससे मनुष्य के हाव-भाव, चेहरा और उसकी आकृति-प्रकृति बदल जाती है। उसके आचार, विचार और संस्कार, मस्तिष्क पर प्रभाव डालने लगते हैं। उसकी ध्वनि पर, उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता

है। एक शब्द में कहें तो उसके विकास पर प्रभाव पड़ता है। वही एनर्जी है, वही उसके समग्र विकास की सीढ़ी है। अगर उस एनर्जी को विकास की तरफ सीढ़ी चढ़ने



राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

के लिए इस्तेमाल न करें तो वही एनर्जी उतरने या पतन की ओर जाने की सीढ़ी है। सार में, मनुष्य पतित बन जाता है, विकारी बन जाता है। मनुष्य किसी भी विकार के वश यदि हो, उसको पतित कहा

जाता है। विकारों में जो सबसे पहले वाला है काम विकार, उसके वशीभूत को विशेष रूप से पतित कहा गया है। जो एनर्जी है उससे जो सीढ़ी नहीं चढ़ता बल्कि उससे उतरता है तो उसका नाम है पतन। हमें जो यह जीवन मिला है संगम का, इसमें सीढ़ी चढ़ने में इस शक्ति का इस्तेमाल करें। यह तभी हो पाता है जब बाबा की शिक्षा सदा हमारे संग रहे। अगर सदा साथ न रहे तो मनुष्य की जो पुरानी आदतें हैं, पुराने संस्कार हैं वे उसको खींचकर ले जाते हैं। इस कुमार जीवन में जहाँ शरीर का विकास या एनर्जी ग्रोथ मुख्य गुण होता है, वहाँ दूसरी बात हमने यह भी देखी है कि मनुष्य की एम्ब्रेशन (महत्वाकांक्षा) होती है कि इस जीवन में हम कुछ न कुछ कर लें। हरेक व्यक्ति में एक जोश होता है कि हम कुछ करके दिखायें। कोई न कोई नवीनता हम करके दिखायें, कोई न कोई काम करके दिखायें। जहाँ एनर्जी होती है, वहाँ एनर्जी को इस्तेमाल करने की बात आती है जिसको हम इच्छा कहें या आकांक्षा कहें। लेकिन आप देखेंगे कि अन्य मनुष्यों की मत में और शिवबाबा की मत में महान अंतर है। इच्छा के बारे में भी वहाँ और यहाँ अन्तर है। जैसे मनुष्य कहेंगे, जगत् बना ही नहीं है। बाबा क्या कहते हैं?

जगत् हमारे सामने है, बना हुआ कैसे नहीं? वो कहेंगे कल्प की आयु करोड़ों-अरबों वर्ष है, बाबा कहते हैं, केवल पाँच हजार वर्ष है। वे कहते हैं कि आत्मा निर्लेप है, बाबा कहते हैं कि लेप-क्षेप आत्मा को ही लगता है। यह सारा अन्तर है। इसी प्रकार मनुष्य-आत्मायें क्या कहती रहीं? इच्छाओं का दमन करते रहीं। इच्छा को दबाने की कोशिश करो। लेकिन बाबा ने हमें क्या कहा? इच्छा मात्रम् अविद्या बने। लेकिन बिना इच्छा के कोई कार्य होता ही नहीं। जब मनुष्य कोई कार्य करता है, पहले-पहले उसके मन में इच्छा ही उत्पन्न होती है। लेकिन कुमार अवस्था, युवा अवस्था की सशक्त विशेषता है कि मनुष्य की आकांक्षायें, इच्छायें बहुत प्रबल होती हैं, उत्कट (तीव्र) होती हैं। एक नहीं, अनेक उत्कट इच्छायें हैं। यह कर डालें, वो भी कर डालें, फलानी परीक्षा भी पास कर लें। फलाने तरीके से पैसा भी कमा लें। फलाने तरीके से ईश्वरीय सेवा भी कर लें। ये भी कर लें, वो भी कर लें। मनुष्य इतने प्लैन्स तो कर लेगा फिर कर पायेगा या नहीं, वह अलग बात है लेकिन बुद्धि चलती है, एनर्जी होती है, मन करता है कि हम कुछ करें, हमारा समय व्यर्थ जा रहा है, हमारी शक्ति व्यर्थ जा रही है, लेकिन ईश्वरीय सेवा करने से हमारा सौभाग्य बन जाता है।



**राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका**

आज मनुष्य की बुद्धि बहुत पॉवरफुल शक्ति है। इंसान का जब जन्म होता है संसार में तो ईश्वर से उनको दो गिफ्ट मिलती है, कौन-सी दो गिफ्ट? पहली गिफ्ट मिलती है बुद्धि, जो अपने जीवन में सही-गलत को अच्छी तरह समझ सके और निर्णय ले सके। और दूसरी गिफ्ट मिलती है फ्रीडम ऑफ च्वाइस (कोई भी चीज चुनने की स्वतंत्रता)। एक स्वतंत्र इच्छा कि अब तुम्हें क्या करना है, सही-गलत को पहचान लिया। आप एक छोटे बच्चे के आगे झूठ बोल कर देखो वो भी तुरंत आप से कहेगा कि आपने झूठ बोला है, या कभी-कभी आप बच्चों को कह दो कोई मेहमान आए हैं उनको कह दें कि पापा घर में नहीं हैं या मम्मी घर में नहीं हैं, बच्चा इतना इन्फोर्मेंट होता है कि वह जाकर मेहमान से यही कहता है कि मम्मी ने कहा कि वह घर में नहीं है। झूठ यहाँ वास्तविकता नहीं है लेकिन बच्चे की बुद्धि ने अभी तक ये स्वीकार नहीं किया कि मम्मी-पापा ने ऐसा क्यों बोला। अगर बच्चा आपसे कहता है कि आपने झूठ बोला ना तो बड़े क्या कहते हैं? अरे तू समझता नहीं चुप बैठ, बीच में बोलने की आदत पड़ी है, तो जैसे ही आप ये बात

विवेक से सही दिशा चुनें

कहते हैं, बच्चा समझता है कि मैंने कुछ गलत तो नहीं बोला और अंदर ही अंदर कम्प्यूज होता है कि मैंने क्या गलत बोला! अरे जो मम्मी-पापा ने बोला वो मैंने बोल दिया। फिर वो सोचता है कि मम्मी-पापा जो कह रहे हैं, वो समझदार हैं इसलिए कह रहे हैं कि मुझे समझ में नहीं आ रहा है। और यही अंतरद्वन्द्व उसे उन बातों को कहने पर मजबूर करता है जो माता-पिता ने या बड़ों ने थोपा और वही उसका संस्कार बन जाता है। फिर जब बच्चा झूठ बोलने लग जाता है तो बड़े क्या कहते झूठ बोलता है, कहाँ से

जितना हम सही दिशा को लेते हैं, सात्विक दिशा को लेते हैं और अपनी ऊर्जा को वहाँ यूज करते हैं उतनी बैटरी चार्ज होना शुरू होती है और व्यक्ति उस विवेक शक्ति से बहुत ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है।

सीखी ये गंदी आदत? बच्चा कभी-कभी कह देगा आपसे ही तो सीखा। आपने कहा मैं समझदार नहीं हूँ।

कहने का भावार्थ ये है कि व्यक्ति की जैसी प्रकृति होती है सात्विक, राजसिक, तामसिक, आत्मा ओरिजनल सात्विक प्रकृति से संसार में आती है ईश्वर के धाम से। जब इस संसार में आए तो बड़े सात्विक स्वरूप में हम आए, शुद्ध स्वरूप में आए, लेकिन फिर घर का

माहौल, संग जो हमें प्राप्त होता है वो जिस तरह का होता है अगर सात्विक है तो वह दिशा प्राप्त करते हैं, राजसिक है तो वह दिशा में जाते हैं या तामसिक है तो फिर वह दिशा अपना लेते हैं। इसलिए फिर अपने विवेक को यूज करना बंद कर देते हैं और गलत कार्य की ओर आगे बढ़ते जाते और यही समझने लगते हैं कि गलत ही सही है। यही जिंदगी है और इसीलिए जो हमें फ्रीडम ऑफ च्वाइस मिली थी कि कौन-सा चूज करना सही या गलत वो चुनाव हमें करना था, लेकिन हमने गलत चुनाव अपनी लाइफ के लिए कर लिया और तब से बैटरी फास्ट डिस्चार्ज होने लगी। और जितना हम सही दिशा को लेते हैं, सात्विक दिशा को लेते हैं और अपनी ऊर्जा को वहाँ यूज करते हैं उतनी बैटरी चार्ज होना शुरू होती है और व्यक्ति उस विवेक शक्ति से बहुत ऊंचाई को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए बुद्धि बहुत कुशल है और यह बुद्धि हमें जिस दिशा में ले जानी है उसी दिशा में हम ले जाते हैं इसीलिए बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होती है।

उसके बाद जब हम कर्म में आते हैं, तो कर्म आत्मा के ऊपर अपना प्रभाव छोड़ देता है जिसको कहते हैं संस्कार। और वो कर्म जब प्रभाव छोड़ देता है तो वो हमारा व्यक्तित्व बनाता है, पर्सनैलिटी क्रिएट करता है। इसीलिए आज संसार में इतने करोड़ों मनुष्य हैं, लेकिन एक की पर्सनैलिटी न मिले दूसरे से। हर व्यक्ति भिन्न है क्यों? क्योंकि हर एक के कर्म भिन्न हैं, हर एक के संस्कार भिन्न हैं।



हैदराबाद-आन्ध्र प्रदेश। ब्रह्माकुमारीज शांति सरोवर के ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम में 'बिनिंग द गेम ऑफ माइंड' विषय पर आयोजित सम्मेलन में विभिन्न खेल एकेडमीज, स्टेडियम, स्कूलों और इंस्टीट्यूट्स से खिलाड़ी शामिल हुए। कार्यक्रम में खेलमंत्री वी श्रीनिवास गौड़, तेलंगाना राज्य सरकार, एमएसके प्रसाद, पूर्व बीसीसीआई चीफ सेलेक्टर एण्ड क्रिकेट कमिटेटर, द्रोणाचार्य अवंडी, नेशनल एथलेटिक्स कोच, रमेश नागपुरी, डॉ. पी. रवि शंकर, नेशनल अचैरी कोच, वीवी सुब्रह्मण्यम् डेप्युटी एडिटर, स्पोर्ट्स, द हिंदू, डॉ. सी. वीरेंद्र स्पोर्ट्स साइकोलॉजिस्ट, आरधना शर्मा, हाई परफॉर्मेंस न्यूट्रिशन कंसल्टेंट, बोके ईवी गिरीश, इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर एंड लाइफ कोच, राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप वाइस चेरपरसॉन, स्पोर्ट्स विंग, ब्र.कु. डॉ. जगबीर सिंह नेशनल कॉऑर्डिनेटर, स्पोर्ट्स विंग तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



दिल्ली-नरेला। क्रिसमस और नव वर्ष पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नवनिर्वाचित निगम पार्षद श्वेता खत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन। साथ ही जोगेंद्र दहिया, अध्यक्ष फेडरेशन ऑफ नरेला, ब्र.कु. योगेश्वरी, ब्र.कु. बृजबाला तथा अन्य।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बाक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR

Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087



राजकोट-मेहुलनगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र के दशाब्दी महोत्सव के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए धारासभ्य और डेप्युटी मेयर डॉ. दर्शिता शाह, टाउन प्लानिंग शाखा के चेरपरमैन और कॉर्पोरेटर नरेंद्र डब, क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.भारती दीदी, ब्र.कु.अंजू बहन, ब्र.कु. नलिनो बहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चेतना बहन तथा अन्य।



सोनीपत-हरियाणा। सारथी संस्था द्वारा शिव शक्ति स्कूल में आयोजित सम्मान कार्यक्रम में सेक्टर-15 की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.प्रमोद बहन को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए सारथी संस्था संस्थापक सतपाल सिंह अहलावात। कार्यक्रम में उपस्थित रहे बॉलीवुड एक्टर यशपाल शर्मा, नेता ललित बत्रा, आईजी हरियाणा पुलिस सुमन मंजरी, समाजसेवा अशोक शर्मा, प्रो. सुदेश जी, वीसी, बीपीएस यूनिवर्सिटी खानपुर तथा अन्य।



राँची-झारखंड। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए डॉ.महादेव महतो, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, डॉ. बी.के. झा वरिष्ठ वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कृष्णाकांत पाठक प्रागतिशील कृषक, आर.पी. सिंह रतन, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, हेड एक्सटेंशन एजुकेशन, डॉ. सूर्य प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, डॉ. उत्तम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, ब्र.कु. निर्मला बहन, ब्र.कु. प्रदीप तथा अन्य।



भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के पीस ऑडिटोरियम में नव वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न स्कूलों में चल रहे 'टच द लाइट प्रोजेक्ट' में उत्कर्ष विद्यार्थियों को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्राची बहन तथा ब्र.कु. स्नेहा बहन।

वैंक ऑफ बड़ोटा
Bank of Baroda

BHIM
Baroda Pay

SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : RERF Om Shanti Media

vpa : 09000r0076184@barodampay



जरा सोचें.

जो समय को पहचान गये वो समझदार बन गये



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

हमें सत्य पता चला है कि यह समय कौन-सा है, कौन आया है, हम कौन हैं, वह क्या दे रहा है और क्या होने वाला है हम सब कुछ जानते हैं। सबसे बड़ी बाबा की देन है बाबा का सत्य ज्ञान। ब्राह्मण जन्म होते ही दिव्य बुद्धि की गिफ्ट बाबा देते हैं। बाबा रोज सुबह-सुबह हमें क्या देता है? अकल देता है। कहते हैं न कि भगवान सुबह-सुबह अकल बांटने आते हैं। कहते हैं न भगवान जब अकल बांटने आए तो कहाँ गए थे, सोये हुए थे क्या? ऐसे कहते हैं न वह तो बेचारे अज्ञान नींद में सोये हैं, हम रोज सुबह-सुबह बाबा से अकल लेते हैं। मुरली क्या देती है जब कोई प्रश्न पूछते थे न बाबा से, तो बाबा बताते थे एक भाई ने प्रश्न पूछा कि बाबा मित्र संबंधी बहुत आग्रह करते हैं शादी कर लो, शादी कर लो, बाबा मैं क्या करूँ? तो बाबा ने मुरली में ही जवाब दिया कि बच्चे क्या करना है, क्या नहीं करना है। क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए यही तो बाबा रोज समझाते हैं। फिर भी बच्चा पूछ रहा है जरूर शादी करने की दिल है तभी तो पूछ रहा है। वरना भगवान ने तो कह ही दिया है कि हमें क्या करना है। रोज यह साधारण शब्दों में सत्य बात बाबा बताते हैं, सदबुद्धि देते हैं। इसलिए बुद्धि का पात्र बाबा कहते हैं सोने का चाहिए।

मुरली बुद्धि को शार्प और स्वच्छ बनाती
आप देखेंगे कईयों में बहुत शक्ति है। जो भी बड़े-बड़े जज हैं, कितने बड़े-बड़े डिजीटल देते हैं, लेकिन बुद्धि शुद्ध होगी तो ही उस निर्णय शक्ति को सही दिशा में लगा सकेंगे इसलिए बुद्धि का पात्र बहुत स्वच्छ चाहिए। हमारा और कोई शास्त्र नहीं है। हमारा एक ही शास्त्र है, वो है मुरली। सर्व शास्त्रों का सार उसमें है। उसका जितना अच्छी तरह

आप अध्ययन करते हैं उससे हमें राइट सेंस मिलती है। इस ज्ञान और योग से बाबा कहते तुम इतने सेंसिबल बनते हो। जो बात बाबा समझाते हैं उससे सही सबक सीखना है। बाबा ने आत्मा का लेसन दिया उससे हमने कौन-सा पाठ सीखा कि हम सब आत्मा भाई-भाई हैं। इसका मतलब हमारा सबसे व्यवहार कैसा हो? पवित्र हो, अपनेपन का

अगर हम समय को पहचान गए कि यह महापरिवर्तन का समय है, यह कल्याणकारी संगम का समय है इस सत्य को जो समझ गये उनमें कौन-सी बुद्धि आएगी, सदबुद्धि। वो टाइम वेस्ट नहीं करेगा, वह अपने संकल्पों को वेस्ट नहीं करेगा, क्योंकि पता है यह बीज बोने का समय है।

हो, रूहानी स्नेह का हो। तो वह पाठ सीखना वो है दिव्य बुद्धि। अगर हम लड़ते रहते हैं तो आत्मा भाई-भाई क्या सीखा हमने? जब हमारे मन में किसी के लिए कोई घृणा ना हो, नफरत ना हो, वैर ना हो, द्वेष ना हो, ईर्ष्या ना हो तो कहेंगे हमने वह पाठ पढ़ा और सबके कल्याण की बुद्धि प्राप्त की, इस प्रकार हमने समय को पहचाना। अगर हम समय को पहचान गए कि यह महापरिवर्तन का समय है, यह कल्याणकारी संगम का समय है इस सत्य को जो समझ गये उनमें कौन-सी बुद्धि आएगी, सदबुद्धि। वो टाइम वेस्ट नहीं करेगा, वह अपने संकल्पों को वेस्ट नहीं करेगा, क्योंकि पता है यह बीज बोने का समय है।

समय पर असाधारण कर्म कर लेना समझदारी
अगर अलबेलेपन से इस समय सावधान नहीं

रहे, कोई हल्का कर्म रूपी बीज बोया तो अनेक गुणा हल्का ही फल मिलेगा। संगम पर यह वरदान है कि एक का पदमगुणा मिलता है। भगवान के आने पर यह ऑफर है। पर अगर कर्म रूपी बीज साधारण बोये तो अनेक गुणा फल भी साधारण ही मिलेगा। तो हमने जाना यह कौन-सा समय है। पर इससे हमने दिव्य बुद्धि क्या प्राप्त की कि मुझे समय को सफल करना है, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को जान लिया, किस कारण से उतरती कला हुई और किन गुणों से चढ़ सकते हैं, वह अटेन्शन लेकर धारणाएं जीवन में करना वह दिव्य बुद्धि है।

समय है एक पर बुद्धि एकाग्र करने का
अब एक बाप से योग लगाना है। यह समय है बाबा को याद करने का, औरों को याद नहीं करना है। रोज की मुरली से हमें दिव्य बुद्धि प्राप्त करते जाना है। तो कोई कम्प्यूजन नहीं होगा, आप कभी मूझेगी नहीं। कैसी भी परिस्थिति आए सॉल्यूशन बाबा का दिया हुआ है। बुद्धि में हम घबरायेगी नहीं, चिंतित नहीं होंगे, भयभीत नहीं होंगे। हम दुःखी हो नहीं सकते भल हिसाब-किताब भी आयेंगे, बीमारियां भी आयेंगी, परिस्थितियां भी आयेंगी, ऊपर-नीचे भी होगा, कमाई में, धंधे में किसी में भी मैं आत्मा हिलंगी नहीं। क्योंकि ज्ञान है कि ड्रामा कल्याणकारी, ज्ञान कल्याणकारी, हिसाब-किताब चुकतू हो रहे हैं। हिम्मत रहेगी, धीरज रहेगा। इसलिए सावधानी चाहिए कि कोई भी संगदोष में यह दिव्य बुद्धि बिगड़ न जाए, प्रभाव न पड़े। किसी के संग में हर बात मुझे वेरीफाय करनी है मुरली से, जहाँ से हमें श्रीमत मिलती है। और बाबा कहते हैं न कि हमेशा यह सोचो मेरे स्थान पर ब्रह्मा बाबा होते तो क्या व्यवहार करते तो आपको सही निर्णय आयेगा और दिव्य बुद्धि भी। उसके बाद ही पुरुषार्थ आगे चलता है।



जावरा-म.प्र.। कर्नाटक राज्य के माननीय राज्यपाल थावर चंद गहलोत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सावित्री बहन तथा अन्य।



पुणे-महा.। अमराई कोथरूड में ब्रह्माकुमारीज मुकुंदनगर एवं ताराचंद रामनाथ ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में 'हैपीनेस ऑफ ए ब्यूटीफुल रिलेशनशिप' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे पुरुषोत्तम लोहिया, राजकुमार अग्रवाल, संजय चोर्डिया, डॉ. बनारसीलाल साह, डॉ. प्रताप मिड्डा, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी बहन, ब्र.कु. सुजाता, ग्लोबल हॉस्पिटल ब्र.कु. सरिता तथा अन्य।



जयपुर-राजापार्क(राज.)। प्रसिद्ध कथावाचिका जया किशोरी को गुलदस्ता भेंट करते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. पूनम दीदी। साथ हैं ब्र.कु. पूजा बहन।



धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 7 दिवसीय 'स्वस्थ एवं खुशनुमा जीवन के लिए सहज राजयोग' विषय पर आयोजित शिविर का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए मोहन लालवानी, अध्यक्ष, दिव्यांग जन बोर्ड सलाहकार, छ.ग. शासन, रामू रोहरा, प्रदेश महामंत्री, बीजेपी, आनंद पवार, सक्रिय नेता, कांग्रेस, मेडिटेशन एवं मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. अदिति बहन, मा.आबू, ब्र.कु. दीप्ति, दिल्ली तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन।



भंडारा-महा.। ब्रह्माकुमारीज के अद्वैत उप-सेवाकेन्द्र का भूमि पूजन करते हुए ब्र.कु. रजनी बहन, ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. सुशील बहन, ब्र.कु. मीरा बहन, ब्र.कु. शालू बहन तथा अन्य बहनें। इस अवसर पर पूर्व शुगर पॉवर राज्यमंत्री विलासराव, सुधीर बोरकुटे पुलिस स्टेशन थानेदार, नवनिर्वाचित सरपंच शिवशंकर मंगते तथा रिमता गिरी पंचायत समिति सदस्य उपस्थित रहे।



अम्बिकापुर-चोपड़ापारा(छ.ग.)। नव विश्व भवन में नव वर्ष के अवसर पर कैडल लाइटिंग एवं केक कटिंग कर नये वर्ष का आगमन करते हुए सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।



सुंगुवरचरितराम-चेन्नई(तमिलनाडु)। ब्रह्माकुमारीज के यूथविंग द्वारा हैप्पी विलेज रिट्रीट सेंटर में आम जनता के लिए You@meditation.calm विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डॉ.एन वेंकट रमणन, प्रिंसिपल एएम जैन कॉलेज, मीनांबक्कम, पी मारिमुथु, अरुण एंटरप्राइजेज, ब्र.कु. मधन, यूथ विंग के वरिष्ठ सदस्य, राजयोगिनी ब्र.कु.बीना दीदी, क्षेत्रीय निदेशिका, ब्र.कु. कविता, यूथ विंग जूनल को-ऑर्डिनेटर तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



वाशी-नई मुंबई। राष्ट्रीय ग्राहक दिवस के अवसर पर कञ्चुमर राइट्स ऑर्गनाइजेशन महाराष्ट्र की ओर से ब्र.कु.शीला दीदी को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए पूर्व वैद्यकीय अधिकारी कांकण भवन डॉ.गणेश धूमाल। इस दौरान पूर्व विधायक मंगेश सांगळे, डॉ. राजश्री पाटील सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

आपके स्वास्थ्य में तिल के तेल का महत्व भी कोई कम नहीं...

स्वास्थ्य के लिए तिल का तेल खाने के फायदे कई हैं। यह कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इस कारण इसे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी कहा जाता है। तिल का तेल कुछ शारीरिक समस्याओं के लक्षणों को कम करने में भी मदद कर सकता है, लेकिन यह तेल किसी बिमारी का इलाज नहीं है। यहाँ हम आपको तिल के तेल के गुणों के आधार पर तिल के तेल के फायदे और सावधानी के तौर पर नुकसान के बारे में बतायेंगे...

1. विटामिन ई का अच्छा स्रोत

एक रिसर्च में बताया गया है कि तिल के तेल में टोकोफेरॉल होता है। यह विटामिन ई का ही एक रूप है। इस वजह से तिल के तेल को विटामिन ई का अच्छा स्रोत माना जाता है। इसके अलावा, टोकोफेरॉल यानी विटामिन ई एंटीऑक्सीडेंट्स की तरह कार्य करता है, जो शरीर को फ्री रेडिकल्स से बचाकर कई बीमारियों के जोखिम को कम कर सकता है। बताया जाता है कि फ्री रेडिकल्स की वजह से शरीर में कैन्सर सेल्स के बढ़ने व हृदय रोग का जोखिम हो सकता है।

2. एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण

तिल के तेल के औषधीय गुणों में से एक एंटी-इंफ्लेमेटरी भी है। इसके एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रभाव के कारण तिल के तेल का इस्तेमाल शरीर की सूजन संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए किया जा सकता है। सूजन शरीर के बाहरी और अंदरूनी दोनों भाग में हो सकती है, जिससे तिल के तेल का उपयोग करने से राहत मिल सकती है।

3. दर्द से राहत पाने के लिए

एनसीबीआई के एक शोध के अनुसार, तिल का तेल दर्द से राहत दिलाने में मदद कर सकता है। दरअसल, तिल के तेल में एंटी-नोसिसिटिक (दर्द को कम करने वाला) प्रभाव पाया जाता है। इस कारण तिल के तेल का उपयोग जोड़ों का दर्द दूर करने से लेकर दांत दर्द

दूर करने के लिए किया जा सकता है। रिसर्च में लिखा है कि मासिक धर्म सिंड्रोम, खरोंच और कटने के कारण होने वाले दर्द को कम करने में भी यह तेल सहायक साबित हो सकता है।

4. आँखों के स्वास्थ्य के लिए

इससे जुड़ी एक रिसर्च में लिखा है कि तिल का तेल मधुमेह नेत्र रोग यानी डायबिटिक रेटिनोपैथी (रेटिना में सूजन) से जुड़े जोखिम को कम कर सकता है। चूँही पर किए गए अध्ययन के अनुसार, तिल के तेल में मौजूद सेसमिन कंपाउंड रेटिना की सूजन को कम

रक्तचाप को कम करने के साथ ही उच्च रक्तचाप रोगी में इसके स्तर को बढ़ने से रोक सकता है। इस बात का जिक्र एनसीबीआई द्वारा पब्लिश एक मेडिकल रिसर्च में भी है। साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव, विटामिन ई और अनसेचुरेटेड फैटी एसिड भी रक्तचाप के स्तर को नियंत्रित रखने में मदद कर सकते हैं। इसी वजह से तिल का तेल खाने के फायदे में ब्लड प्रेशर नियंत्रण को भी गिना जा सकता है।

6. अर्थराइटिस से राहत दिलाए

अर्थराइटिस की समस्या को गठिया के नाम से भी



करने में प्रभावी हो सकता है। साथ ही इसके कारण होने वाले अंधेपन से बचाव करने में भी मदद कर सकता है। यही नहीं, इसे आँखों की रोशनी को बेहतर बनाए रखने के लिए भी जाना जाता है।

5. रक्तचाप का स्तर कम करे

तिल के तेल में मौजूद पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड

जाना जाता है। इस परेशानी को कम करने में काले तिल का तेल मदद कर सकता है। तिल के तेल में मौजूद लिनेस एंटीइंफ्लेमेटरी प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इसके कारण यह शरीर में होने वाली इंफ्लेमेशन और इससे संबंधी बीमारियाँ जैसे अर्थराइटिस को कम कर सकता है। साथ ही इससे अर्थराइटिस के लक्षण को कम करने में भी मदद मिल सकती है।

7. त्वचा के लिए

तिल का तेल त्वचा से जुड़ी कई समस्याओं को कम करने में लाभकारी हो सकता है। दरअसल, तिल का तेल हीलिंग प्रॉपर्टीज प्रभाव युक्त होता है, जो घाव भरने में मदद कर सकता है। साथ ही तिल के तेल में टोकोफेरॉल (विटामिन ई का एक प्रकार) होता है, जो सूरज की अल्ट्रावायलेट किरणों से सुरक्षा प्रदान कर सकता है। इसके कारण सनबर्न संबंधी परेशानी को कम करने में मदद मिल सकती है।

तिल के तेल के नुकसान

कई बार तिल का तेल नुकसानदायक भी हो सकता है। इससे होने वाले नुकसान कुछ इस प्रकार हो सकते हैं :

संवेदनशील लोगों को तिल के तेल के उपयोग से एलर्जी हो सकती है।

हम ऊपर बता चुके हैं कि तिल के तेल में रक्तचाप का स्तर कम करने की क्षमता होती है। इस लिहाज से अगर कोई ब्लड शुगर कम करने वाली दवाओं का सेवन कर रहे हैं, तो उन्हें इसका सेवन नहीं करना चाहिए। इससे ब्लड शुगर स्तर अधिक कम हो सकता है।

तिल के तेल में कैलोरी अधिक होती है, जिस वजह से अधिक सेवन के कारण शरीर का वजन बढ़ सकता है।

नोट :

डॉक्टर के अनुसार, गर्भवती महिलायें डॉक्टर की सलाह से ही इस्तेमाल करें।

तिल ऑयल की सीमित और संतुलित मात्रा के बारे में कोई वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए, अगर इसका नियमित इस्तेमाल करना चाह रहे हैं तो इसकी मात्रा के संबंध में आहार विशेषज्ञ से सलाह जरूर लें।



पांडव भवन-करोल बाग(दिल्ली)। नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में केक काटिंग करते हुए सुरजीत कुमार डे, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के रजिस्ट्रार, जगमोहन, रीडिसन होटल के अध्यक्ष, मनमोहन, रियल इस्टेट के अध्यक्ष, संजय भूतानी, बिजनेसमैन, ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.आशा दीदी तथा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु.पुष्पा दीदी।



जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। विवेकानंद जयंती 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के अंतर्गत 'उन्नत मन सफलता का आधार' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ. अभिलाष पांडे, पूर्व युवा अध्यक्ष, बीजेपी, डॉ. श्याम रावत, कैन्सर रोग विशेषज्ञ, ब्र.कु.वर्षा, ब्र.कु.भावना, ब्र.कु.संतोष तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए सीआरपीएफ 95वीं बटालियन के कमांडेंट अनिल कुमार वृक्ष, एनडीआरएफ के कमांडेंट मनोज कुमार शर्मा, सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट विनोद कुमार सिंह, जिला उद्यान अधिकारी ममता यादव, क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु.सुरेंद्र दीदी, क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी ब्र.कु.दीपेंद्र। कार्यक्रम में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ.एस.पी.यादव, डॉ.के.पी.जायसवाल, डॉ.एम.के. मिश्रा, डॉ.योगेश्वर सिंह, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. तापोशी बहन, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. विपिन तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



बहल-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज द्वारा राष्ट्रीय किसान दिवस पर किसानों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में खण्ड कृषि अधिकारी, बीएओ, डॉ. संजीव, खण्ड विकास अधिकारी, एडीओ, डॉ. जय कुमार भौरिया, प्रगतिशील किसान महेंद्र साबू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य।

परमात्मा को याद करने की क्यों है आवश्यकता

जिसको हम याद करेंगे, क्यों याद इतना इम्पोर्टेंट है कि किसको करना है? जिसको हम याद करेंगे वो ध्यान से फिट करना। जिसको हम याद करेंगे हमारा मेंटल कनेक्शन उस आत्मा के साथ जुड़ जायेगा। और उस आत्मा की जो स्थिति होगी उसके साथ हमारा एनर्जी एक्सेंज शुरू हो जायेगा। पर जैसी उनकी स्थिति होगी वैसी हमारी होने लग जायेगी। जैसे कोई बच्चा परेशान है, मुश्किल में है उसके साथ कुछ हुआ है वो दूर है लेकिन घर बैठे माँ को पता चल जाता है ऐसा क्यों होता है? ये हर बार नहीं होगा, कभी-कभी होगा। ये कभी-कभी क्यों होता है? माँ यहाँ बैठी है बच्चा बाहर है, लेकिन माँ घर बैठे उस क्षण बच्चे को याद कर रही थी। और उस क्षण बच्चा तकलीफ में आया और किसको याद किया माँ को याद किया। जब दोनों ने सेम टाइम एक-दूसरे को याद किया तो क्या हुआ फोन लग गया। अगर एक कर रहा होता है, बच्चा माँ को याद कर रहा होता और माँ अपनी फ्रेंड को याद कर रही होती तो नहीं लगता। वो लगेगा तब जब



ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

वो दोनों उसी क्षण एक-दूसरे को याद कर रहे हैं। अब जैसे ही कनेक्शन जुड़ गया जैसे ही उसके मन की स्थिति उन तक पहुंच जायेगी। इज लाइक है वेबसाइट लिंक(वेबसाइट के लिंक की तरह)। उस साइट पर जो डेटा है वो हमारे पास डाउनलोड हो जायेगा। अब कलियुग में जितना हम आत्माओं को याद करेंगे तो क्या हो जायेगा थोड़ा-सा? अगर मैंने

किसी ऐसे को याद किया जो बहुत उदास है तो मुझे भी क्या होने लग जायेगा? अगर मैंने उसको याद किया जिसको बहुत क्रोध आ रहा है तो मेरे ऊपर भी क्या डाउनलोड होने लग जायेगा? उस दिन सिर्फ चेक करना कि आज मन से कनेक्शन किसके साथ जुड़ा था और उस व्यक्ति को फोन करके पूछना कि आज आपका हाल-चाल क्या है? आपको उत्तर मिलेगा कि आज वो लॉ फील कर रहा है।

इसलिए हमें ये सिखाया कि भगवान को याद करो, उसका नाम लेते रहो तो कनेक्शन कहीं जुड़ा रहेगा? उसकी जो स्थिति होगी वो डाउनलोड हो जायेगी। वो शांति का सागर है अगर हमने उसको याद किया तो... ये हमारी च्वाँइस है कि हमें कहीं कनेक्ट होना है। अगर कनेक्ट होने की विधि सीख ली, रिश्ता जुड़ गया एनर्जी डाउनलोड होने लग गई तो वो कभी भी कहीं भी कर सकते हैं हम। अगर स्थिति वैसी नहीं, कनेक्शन वैसा नहीं जुड़ा हो तो हम पूजा करने भी बैठे हैं लेकिन मन कहीं ओर ही जायेगा।



शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय शांतिवन का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में आई.जी, सीआरपीएफ सुनील जॉन, डायरेक्टर आईएसए मा.आबू के साथ ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. कर्नल सती, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।



लोधी रोड-दिल्ली। सामंत गोयल,आईपीएस,सचिव,रिसर्च एंड एनालिसिस विंग,भारत सरकार के साथ ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. दीपिका बहन तथा अन्य।



नरवाना-हरियाणा। राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आयोजित किसान सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एसपी कुलदीप सिंह, मुख्य वक्ता मनबीर रेडू, ग्राम विकास प्रभाग पंजाब ज़ोन के कोऑर्डिनेटर ब्र.कु.विजय, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. मीना बहन तथा अन्य।



बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। गुरुवासीदास विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में सीयू में एनजीओ और स्वयं सेवा संस्थाओं की बैठक में ब्रह्माकुमारीज की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.मंजू बहन। सभा में कुलपति प्रो.आलोक कुमार चक्रवाल, रजिस्ट्रार मनीष श्रीवास्तव सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। नवनिर्वाचित मेयर अनीता देवी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. पूनम बहन एवं ब्र.कु.सुधा बहन। साथ हैं मनोज कुमार तांती,प्रदेश उपाध्यक्ष,दलित प्रकोष्ठ।



भुवनेश्वर-पटिया(ओडिशा)। श्रीमती इति सामंत, कादम्बिनी मैंगजीन के मुख्य सम्पादक को नव वर्ष की बधाई व ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गोलप बहन व ब्र.कु. डॉ. कृष्ण बसंती,ग्लोबल हॉस्पिटल मा.आबू।



पन्ना-म.प्र.। भजन संध्या कार्यक्रम में स्थानीय उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए सांसद विष्णुदत्त शर्मा।



राजगढ़-म.प्र.। विधायक बापू सिंह तंवर और उर्मिला तंवर को नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता बहन तथा ब्र.कु. सुमित्रा बहन।



पणजी-गोवा। मेडिकल कॉलेज बम्बोलिम के डीन ऑफ जीएमसी डॉ. शिवानंद बादेकर को शॉल, मेडल द्वारा सम्मानित करने के पश्चात् सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए मेडिकल विंग के सचिव राजयोगी ब्र.कु.बनारसी,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्रह्माकुमारी बहनें।



ठाणे-श्रीनगर(महा.)। कक्षा 5वीं से 8वीं के स्कूली बच्चों के लिए 'व्यक्तित्व विकास' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को सर्टिफिकेट प्रदान करने के पश्चात् समूह चित्र में समाजसेवी राजा भाऊ सेठ, मुख्य वक्ता कनिका जैन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन, ब्र.कु. कुसुम यादव, ब्र.कु. हेमंत जैन, ब्र.कु. प्रान सुतार तथा अन्य।



नरकटियागंज-चंपारण(बिहार)। जिले के ऐतिहासिक स्थल चंकीगढ़ के संपूर्ण क्षेत्र में 52 ब्र.कु. भाई-बहनों की टीम सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु.अंबिता बहन के नेतृत्व में भ्रमण कर ईश्वरीय संदेश देते हुए राजा चाणक्य से जुड़े चंकीगढ़ के टॉप ऊँचाई पर चढ़कर सभी ने शिवबाबा का ध्वज फहराया।



भरतपुर-पहाड़ी(राज.)। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की 53वें स्मृति दिवस के अवसर पर श्रद्धार्जलि अर्पित करते हुए डॉ.सुभाष, सरपंच संतो देवी, ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य।

परमात्म ऊर्जा



जब तक त्याग नहीं तब तक सेवाधारी हो नहीं सकेंगे। सेवाधारी बनने से त्याग सहज और स्वतः हो जायेगा। सदैव अपने को बिज्जी रखने का सही तरीका है। संकल्प से, बुद्धि से, चाहे स्थूल कर्मणा से जितना फ्री रहते हो उतना ही माया चान्स लेती है। अगर स्थूल और सूक्ष्म- दोनों ही रूप से अपने को सदैव बिज्जी रखो तो माया को चान्स नहीं मिलेगा। जिस दिन स्थूल कार्य भी रूचि से करते हो उस दिन की चेंकिंग करो तो माया नहीं आयेगी, अगर देवता होकर किया तो। अगर मनुष्य होकर किया, फिर तो चान्स दिया। लेकिन सेवाधारी हो और देवता बन अपनी रूचि, उमंग से अपने को बिज्जी रखकर देखो तो कभी माया नहीं आवेगी। खुशी रहेगी। खुशी के कारण माया साहस नहीं रखती सामना करने का। तो बिज्जी रखने की प्रैक्टिस करो। कभी भी देखा आज बुद्धि फ्री है, तो स्वयं ही टीचर बन बुद्धि से काम लो। जैसे स्थूल कार्य की डायरी बनाते हो, प्रोग्राम बनाते हो कि आज सारा दिन यह-यह कार्य करेंगे, फिर चेक करते हो। इसी प्रमाण अपनी बुद्धि को बिज्जी रखने का भी डेली प्रोग्राम होना चाहिए। प्रोग्राम से प्रोग्रेस कर सकेंगे। अगर प्रोग्राम नहीं होता है तो कोई भी कार्य समय पर सफल नहीं होता। रोज़ डायरी होनी चाहिए। क्योंकि सभी बड़े ते बड़े हो ना! बड़े आदमी प्रोग्राम फिक्स करके फिर कहाँ जाते हैं। तो अपने को भी बड़े ते बड़े बाप के समझकर

हर सेकण्ड का प्रोग्राम फिक्स करो। जिस बात की प्रतिज्ञा की जाती है, तो उसमें विल-पाँवर होती है। ऐसे ही सिर्फ विचार करेंगे, उसमें विल-पाँवर नहीं होगी। इसलिए प्रतिज्ञा करो कि यह करना ही है। ऐसे नहीं कि देखेंगे, करेंगे। करना ही है। जैसे स्थूल कार्य जितना भी ज्यादा हो लेकिन प्रतिज्ञा करने से कर लेते हो ना! अगर डीला विचार होगा, न करने का ख्याल होगा तो कभी पूरा नहीं करेंगे। फिर बहाने भी बहुत बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करने से फिर समय भी निकल आता है और बहाने भी निकल जाते हैं। आज बुद्धि को इस प्रोग्राम पर चलाना ही है- ऐसी प्रतिज्ञा करनी है। भिन्न-भिन्न समस्याएं, पुरुषार्थहीन बनने के व्यर्थ संकल्प, आलस्य आदि आयेंगे लेकिन विल-पाँवर होने कारण सामना कर विजयी बन जायेंगे। यह भी डेली डायरी बनाओ, फिर देखो, कैसे रूहानी राहत देने वाले रूह सभी को देखने में आयेंगे। रूह 'आत्मा' को भी कहते हैं और रूह 'इसेन्स', को भी कहते हैं। तो दोनों हो जायेंगे। दिव्य गुणों के आकर्षण अर्थात् इसेन्स, वह रूह भी होगा और आत्मिक स्वरूप भी दिखाई देंगे। ऐसा लक्ष्य रखना है। तो रूप की विस्मृति, रूह की स्मृति। बिल्कुल ऐसा अनुभव हो जैसे यह शरीर एक बॉक्स है। इनके अन्दर जो हीरा है उनसे ही सम्बन्ध स्नेह है। तो निवास स्थान का भी आधार लेकर स्थिति को बनाओ।

कथा सरिता

एक बार एक चिड़िया अपना खाना चौंच में दबाकर ले जा रही थी, उसकी चौंच से पीपल के पेड़ का बीज नीम के तने में गिर गया। उस बीज को नीम से भरपूर पोषक तत्व, पानी और मिट्टी मिल गई और वो पीपल का बीज पनपने लगा और नीम के आश्रय में बड़ा होने लगा चूँकि वह नीम पर आश्रित था इसलिए उसे फलने-फूलने एवं उसकी जड़ों को पर्याप्त जगह नहीं मिल रही थी। उसका विकास ठीक से नहीं हो पा रहा था।

एक दिन पीपल को गुस्सा आया और उसने नीम से लड़ने की टानी और बोला- ऐ! दुष्ट तू खुद तो फैलता ही जा रहा है। तेरा कद गगन छू रहा है और जड़ें पसरे जा रही हैं और मुझे तू जरा भी पनपने नहीं दे रहा। मुझे भी जगह और खनिज दे वरना तेरे लिए अच्छा नहीं होगा।

उसकी बात खत्म होने पर नीम ने हँसकर उत्तर दिया, हे मित्र! दूसरों की दया



पर इतना ही विकास संभव है और अगर अधिक की अपेक्षा है

तो स्वयं का भार खुद वहन करो, अपनी नींव बनाओ, अपने पैरों पर खड़े हो। यह सुनकर पीपल को बहुत गुस्सा आया पर बात सच थी इसलिए वो बस नीम को कोसने में लगा रहा।

लगा। उसका क्षण का अस्तित्व भी खत्म हो गया। तभी दूर से एक बुजुर्ग ये सब देख रहा था। उन्होंने ये देख कर कहा- जो दूसरों के बल पर अपना आशियाना बनाते हैं वो इसी तरह मुँह के बल गिरते हैं।

शिक्षा: कभी-कभी परिस्थिति वश हम दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं, लेकिन अगर हम

आश्रित ज़िंदगी का अस्तित्व

एक दिन बहुत आंधी तूफान आया। नीम का वृक्ष तो ज्यों का त्यों खड़ा रहा, लेकिन वह आश्रित पीपल अपनी कमजोरी के कारण धराशाही हो गया और ज़मीन चाटने

उसे अपना हक मानने लगे तो गलत है, क्योंकि किसी की योग्यता का पता तब ही चलता है जब वह स्वयं के बल पर कुछ करता है।

एक सिद्ध आचार्य अपने शिष्यों के साथ तीर्थ यात्रा पर निकले। कुछ देर चलने के बाद वे थकान निकालने बीच घने जंगल में ही रूक गये। इतने में आचार्य को कुछ आवाजें सुनाई दी। ध्यान से सुनने पर आचार्य को समझ आया कि यह कुछ लोगों के रोने की आवाज है। उन्होंने शिष्यों को बोला बालकों! सुनो ये आवाजें कहाँ से आ रही हैं? तब शिष्य एक-दूसरे का मुँह

रही थी। आचार्य ने कुएँ में झाँक कर देखा तो उन्हें 5 लोग बहुत ही बुरी दशा में रोते हुए दिखाई दिए, लेकिन शिष्यों को ना आवाज सुनाई दी और ना ही कुछ दिखाई दिया।

तब आचार्य ने उन पाँच लोगों को मुस्कुराते हुए देखा और पूछा- भाई किन कर्मों का भोग रहे हो? तब वे पाँचों और जोर-जोर से रूदन करने लगे।

हैं। आज के समय में इनसे दुर्बल कोई नहीं है।

तब शिष्य ने पूछा, इन्होंने क्या किया है? तब पहली आत्मा ने उत्तर दिया कि वह पिछले जन्म में ब्राह्मण था। भिक्षा मांगता था लेकिन उस भिक्षा को भोग विलास में खर्च करता था। दूसरे ने उत्तर दिया वह क्षत्रिय था और अपनी शक्ति का दुरुपयोग निर्बल, असहाय गरीबों पर करता था। तीसरे ने उत्तर दिया कि वो बनिया था। बस खुद के फायदे की सोचता था और हमेशा मिलावट करके सामान बेचता था। जिस कारण कई लोग मारे गये। चौथे ने उत्तर दिया वह क्षुद्र था। बहुत आलसी और ज़िम्मेदारी से भागता था। अपने माता-पिता को पिटता था और दिन-रात नशा करता था। पाँचवें ने उत्तर दिया वह एक लेखक था। अश्लील कथायें लिखता था। उसने समाज को वासना का पाठ सिखाया था। इस तरह वे सभी पापी अपने पापों को भोग रहे हैं। उन्होंने आचार्य से निवेदन किया। आप गुरु हैं आप दुनिया वालों को समझायें कि बुराई का रास्ता क्षण की खुशी देता है, लेकिन इसका दंड कई जन्मों तक अंधकार में भोगना पड़ता है।

शिक्षा: मनुष्य को कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है फिर वो किसी भी जन्म में हो। कहते हैं जिस तरह ईश्वर हैं वैसे ही भूत भी होते हैं लेकिन वे जितने दुर्बल होते हैं उतना कोई नहीं। व्यक्ति कितना भी इतरा जाये, नियति उसके कर्मों का हिसाब रखती ही है, इसलिए सदैव सद्मार्ग पर चलें अगर गलती हुई भी है तो उसे सुधारें।



कर्मों का फल भोगना निश्चित

देखने लगे क्योंकि उन्हें कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। फिर भी गुरु के आदेशानुसार उन्होंने थोड़ी दूरी पर आकर देखा।

केवल आचार्य को एक गहरे, अंधेरे कुएँ से कुछ लोगों के रोने की आवाज सुनाई दे

तब आचार्य ने शिष्यों को बताया- यहाँ 5 प्रेत आत्मायें हैं। यह सुनकर शिष्य डर गये। तब आचार्य बोले बालकों डरो नहीं। तुम सभी इनसे ज्यादा शक्तिमान हो क्योंकि तुम सब कर्मों से महान हो और ये सभी आज अपनी पिछली करनी का भोग रहे

गया-एपी कॉलोनी (बिहार)। बुद्धा पुरुषार्थ पब्लिक स्कूल में आयोजित यूथ फेस्टिवल कार्यक्रम में डायरेक्टर नवल किशोर, प्राचार्य डॉ. अभय सिंघा, मिशेल साइमन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य।



मुरसान-उ.प्र.। 'आध्यात्मिक काव्य सरिता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पूर्व चैयरमैन किरन शर्मा, नगर पंचायत अध्यक्ष गिरांज किशोर शर्मा, लेखक व कवि डॉ.पवित्र शर्मा, धौलपुर, आशु कवि अनिल बोहरे, कवि श्याम बाबू चिंतन, कवि जयप्रकाश पचौरी, कवि चांद हुसैन, कवयित्री मंजू शर्मा, सादाबाद व रामबाबू पिप्ल, सादाबाद, भारतीय स्टेट बैंक मुरसान शाखा प्रबंधक शम्भू दयाल, कवि रोशनलाल वर्मा, कवि नूर मोहम्मद नूर, सादाबाद, ब्र.कु. भावना बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बबिता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन तथा अन्य।

» भारी होने का कारण देह अभिमान «

ब्र.कु. उर्वशी बहन, नई दिल्ली

आज के दौर में मानसिक समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। हर घर में एक न एक मनुष्य मानसिक रोग से ग्रस्त है। इसके मुख्य कारण हैं एक तो पाप का खाता अधिक होना और दूसरा देह अभिमान का होना। वर्तमान समय में छोटे-छोटे बच्चे भी मानसिक रोगों से ग्रस्त हैं क्यों? क्योंकि उनको अपने मित्रों से, बड़े भाई-बहन से, मात-पिता से मान नहीं मिलता। ये कहावत पहले लागू होती थी कि 'छोटों को प्यार दो और बड़ों को सम्मान' परन्तु अब समय के साथ-साथ हमें अपनी कहावत भी बदल लेनी चाहिए क्योंकि आज एक छोटा बच्चा भी सम्मान चाहता है। ये

आवाज़ में बात की, हमारी बात को तवज्जो नहीं दिया, हमारी प्रशंसा नहीं की, यही सब बातें हमें भारी करती हैं। आधे से ज्यादा मानसिक रोगों का कारण है ज्यादा सोचना व अपने अतीत का बारम्बार चिंतन करना।

प्यारे भाईयों, बहनों जो बीत चुका उसका क्या बार-बार चिंतन करना, किसी ने इज्जत नहीं भी दी तो क्या उसमें इतना सोचना और सोचकर समय गंवाना। देखो बाबा तो रोज हमें कितना प्यार व सम्मान देते हैं तो क्या अभी भी किसी देहधारी के प्यार की आवश्यकता है? बाबा की मुरली ही मीठे बच्चे से शुरू होती है व अंत भी

सुनने का, परन्तु मनुष्यात्माओं की बातों का चिंतन करने के लिए तो हमारी बुद्धि भी विशाल है, शक्तिशाली है, व समय भी है हमारे पास। मनुष्यात्माओं की बातें तो हमें ना जाने कितने वर्षों से याद हैं, और बाबा के महावाक्य हमें सेंटर से निकलते ही भूल जाते हैं और तो और कई बार तो हम महावाक्य सुनते-सुनते ही भूल जाते हैं। इसका मतलब सिर्फ यही है कि हमारे लिए कुछ खास मायने नहीं रखते बाबा के महावाक्य, हमारे लिए कोई महत्व नहीं है बाबा की मुरली का। कहते हैं ना जिससे हमें प्यार होता है फिर उनकी बातें भी हमें प्यारी लगती हैं, जिनका हम सम्मान करते हैं तो उनकी बातों का भी हम मान रखते हैं। यही इस ज्ञान मार्ग में है अगर हमें बाबा की बातें याद नहीं रहती इसका मतलब हमें बाबा से प्यार नहीं है, अभी भी हमारा प्यार सिर्फ देहधारियों से है तभी उनकी सालों पुरानी सभी बातें मुँह जुबानी हमें याद हैं। ये सब भी इसलिए हैं क्योंकि हम देहभान में हैं।

मीठी-प्यारी आत्माओं अब परचिंतन छोड़, अतीत को छोड़ प्रभु चिंतन में लग जाओ, जैसे-जैसे हम बाबा के करीब आते जायेंगे, हम आत्माभिमानी बनते जायेंगे। इस देह के भान में सिवाय दुःख के और कुछ है नहीं। आत्माभिमानी बनने से दुःख की लहर आ नहीं सकती और आत्माभिमानी हम बाबा की मुरली व बाबा की याद से ही बन सकते हैं, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। बाबा ने कहा है कि तुम बच्चे मास्टर दाता हो और दाता हम कब बनेंगे? जब हम आत्माभिमानी बनने लगे क्योंकि आत्माभिमानी बनने के बाद हमारा भिखारी स्वरूप समाप्त हो जाता है और जब हम लेवता नहीं हैं, तो देवता (देने वाले) हो गए ना! इसलिए अब और किसी से प्यार, इज्जत, सहयोग, सम्मान आदि लेने की इच्छा छोड़ बस एक प्यारे पिता परमात्मा को याद करो और उनकी याद से ही आप ये सब सहज व स्वतः ही प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि सभी आत्माएं स्वयं ही खाली हैं वे आपको कैसे कुछ दे सकती हैं? वह आपसे उम्मीद करती हैं और आप उनसे। ये तो कुछ ऐसा हो गया जैसे खाली सागर से गागर भरना। पहले कभी खाली सागर से गागर किसी को भरते देखा है क्या जो अब आप उम्मीद लगाए बैठे हो। आप ये सदैव याद रखिएगा कि सिर्फ बाबा की याद ही हमें मजबूती और खुशियां प्रदान करती हैं।



तो बात रही बच्चों की परन्तु आज कल तो हर उम्र का व्यक्ति मानसिक रोगों से ग्रस्त है। क्या कारण है इसका? इसका कारण है हमारा देह अभिमान। हाँ, यही वास्तविकता है। इस वास्तविकता को जितना शीघ्र हम स्वीकार कर लेंगे उतना ही शीघ्र हम अपने मानसिक रोगों से मुक्त हो जायेंगे। हमारा ही देह अभिमान हमें भारी करता है, यही हमें उड़ती कला का अनुभवी नहीं बनने देता है। देह अभिमान माना मुझ देहधारी का अभी-अभी मान। देह अभिमान माना इस देह का अभिमान अर्थात् मैं गौरा, अमीर, सुन्दर, लम्बा। देह अभिमान में आत्मा सिर्फ लेने ही लेने की भावना रखती है जैसे कोई मुझे प्यार दे, सम्मान दे, इज्जत दे परन्तु देही अभिमान आत्मा सदैव बाप समान देने की इच्छा रखती है, चाहे फिर बात सहयोग की हो, सम्मान की हो, या फिर प्यार की। देह अभिमान ही हमारे सारे दुःखों की जड़ है। किसी ने प्यार से बात नहीं की, ऊँची

मीठे बच्चे से होता है, इसके अतिरिक्त बाबा कितने टाइल हम बच्चों को प्रतिदिन देते हैं जैसे तुम मेरे लायक बच्चे हो, राज्याधिकारी बच्चे हो, विश्व कल्याणकारी बच्चे हो, शिव शक्ति हो, नयनों के नूर हो, दिलतख्तनशीन बच्चे हो, अब और क्या चाहिए! जिसके गुणगान स्वयं भगवान करता हो तो क्या उसे अभी भी किसी देहधारी से प्रशंसा सुनने की इच्छा बाकी है? सोचो स्वयं भगवान ने ये टाइल हमें दिए हैं, स्वयं भगवान बोल रहे हैं, तुम मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे हो, नयनों के नूर हो, लायक बच्चे हो, राजा बच्चे हो तो फिर यदि कोई देहधारी बोल भी दे कि तुम नालायक हो तो क्या ही फर्क पड़ता है! भगवान हमारे भाग्य के गीत गाते हैं तो क्या हमें अपने भाग्य का नशा नहीं होना चाहिए? अब बहुत सारे ब्राह्मण बच्चे बोल देते हैं भगवान के ज्ञान के लिए कि हमारी बुद्धि इतनी विशाल नहीं है, शक्तिशाली नहीं है और समय नहीं है रोज 4 पेज की मुरली



कोटा-सुभाष नगर(राज.)। लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को नव वर्ष की शुभकामना के साथ ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आरती बहन।



ग्वालियर-लक्ष्मण(म.प्र.)। ग्वालियर प्रेस क्लब भवन में म.प्र. पत्रकार संघ, प्रेस क्लब एवं पत्रकार कॉलोनी संघर्ष समिति की संयुक्त आयोजित बैठक में पत्रकार संघ के संस्थापक महासचिव राजेश शर्मा ब्र.कु. प्रहलाद को म.प्र. पत्रकार संघ के आध्यात्मिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष पद पर नियुक्त करने की घोषणा पर ब्र.कु. प्रहलाद को माल्यार्पण कर बधाई देते हुए। बैठक में प्रेस क्लब के सचिव सुरेश शर्मा, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अध्यक्ष राज दुबे, पत्रकार संघ के संभागीय अध्यक्ष बृजमोहन शर्मा, जिला अध्यक्ष दीपक तोमर, मामा माणिकचंद वाजपेयी, पत्रकार कॉलोनी संघर्ष समिति अध्यक्ष राजेंद्र तलेगाँवकर, वरिष्ठ पत्रकार बच्चन बिहारी तथा फोटो जर्नलिस्ट प्रकोष्ठ अध्यक्ष राजेश जायसवाल उपस्थित रहे।



इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। ओम शांति भवन में न्यायाधीश आर.पी. वर्मा, प्रिंसिपल रजिस्ट्रार हाई कोर्ट को नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. दुर्गा बहन तथा ब्र.कु. सारिका बहन।



कटनी-सिविल लाइन(म.प्र.)। ज्ञान चर्चा के पश्चात् श्री बत महाराज जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु.दुर्गा बहन।



भवानीगढ़-पंजाब। राष्ट्रीय सर्वांगीण प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल विजेता लक्ष्य कुमार को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. राजेंद्र बहन। साथ हैं उनके माता-पिता तथा अन्य वरिष्ठगण।



राजगढ़-कलिया देह(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा रामायण, महाभारत एवं श्रीमद्भगवद् गीता पर आधारित सप्त दिवसीय गीता प्रवचन के कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष चंद्र सिंह सोंधिया, बिजली विभाग के सुपरवाइजर रामेश्वर दांगी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य भंवरलाल नागर, सरपंच हरिप्रसाद दांगी, जिला संचालिका ब्र.कु. मधु दीदी सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।



समस्तीपुर-दलसिंहसराय(बिहार)। एसडीओ प्रियंका कुमारी को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर नव वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. सोनिका बहन।



काशीखैरी-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज डोभी द्वारा 'राष्ट्रीय किसान दिवस' पर किसानों को उपवस्त्र व कृषि यौगिक खेती का साहित्य भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में सरपंच प्रीतम सिंह पटेल, वरिष्ठ किसान बृजेंद्र पटेल, ब्र.कु.जानकी बहन तथा अन्य कृषक भाई उपस्थित रहे।



बरेली-उ.प्र.। एसपी ट्रेफिक पुलिस राम मोहन सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीता बहन। साथ हैं ब्र.कु.रजनी बहन।

हम सभी जब भी परमात्मा के साथ जुड़ना चाहते हैं या जुड़ते हैं तो कहते हैं मेडिटेशन सीखना है। और मेडिटेशन सीखकर अपने आप को वैसा बनाना है। परमात्मा के साथ जुड़ना है लेकिन भक्ति में भी कहा जाता है कि जब कभी कथा, पूजा, या किसी यज्ञ की शुरुआत होती है तो उसमें बहुत गहरे से सफाई होती है। सारा कुछ साफ करते हैं, क्लीन करते हैं, सभी नहाते-धोते हैं। उसके बाद यज्ञ की शुरुआत करने के लिए किसी ब्राह्मण को बुलाते हैं। मान्यता है कि उससे पवित्रता, शुद्धता आती है और उससे एक भावना बनती है।

यहाँ भी वही है अध्यात्म और भक्ति। दोनों जुदा-जुदा चीजें हैं, अलग-अलग चीजें हैं। भक्ति में ज्यादातर कभी-कभी वाले भी हैं, रोज-रोज वाले भी हैं और महीने-महीने वाले भी हैं। इसका मतलब कभी चले गए तो कर लिया। लेकिन अध्यात्म में हर वक्त परिवर्तन की जरूरत है। तो परमात्मा से योग लगाना उसका सबसे बड़ा आधार है धारणाएँ। परमात्मा का आधार ही यही है कि जो जितना साफ है, स्वच्छ है, अन्दर से प्लस धारणाओं में भी साफ और स्वच्छ का मतलब कुछ लोगों का ये मत है कि आप सबका सबकुछ बहुत अच्छा है लेकिन पवित्रता की धारणा, खान-पान की शुद्धि ये सारी चीजें जब आप बताते हैं तो इतना करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन आपको

बताते हुए बहुत ही हर्ष होता है कि परमात्मा से जुड़ने के लिए सबसे पहली धारणा खान-पान की शुद्धि की क्यों होनी चाहिए? क्योंकि हमारा पूरा शरीर पंच तत्वों से निर्मित है। और पंच तत्वों में जैसे भी ये जो पूरी दुनिया है पाँच तत्वों से ही तो चल रही है। बाहरी पाँचों तत्वों को आप देखो। कैसे बिल्कुल ही प्रकृति तमोप्रधान हो गई है। जैसे हमारे मन की, शरीर की प्रकृति कैसी होगी अन्दर की? तो इस

हमारे अन्दर के एंटीऑक्सीडेंट हैं उनको मार देता है। जिससे हमारे अन्दर का ऑक्सीजन लेवल बढ़ जाता है। और उससे शरीर में बहुत सारे रोग पैदा हो जाते हैं।

अब हो सकता है डॉक्टर का अलग-अलग मत हो, लेकिन हमने तो यही देखा है। सबके विचार भिन्न हो सकते हैं, लेकिन ये हमारा अपना अनुभव है। जो अनुभव से बात की जाती है वो राइट मानी जाती

मनन-चिंतन कर ही नहीं पायेंगे। तो इसलिए सबसे पहले शुद्धता और पवित्रता की जरूरत होती है। इसलिए खान-पान की शुद्धि के बिना योग लगाना एक्सपेक्ट नहीं कर सकते, मतलब ऐसी उम्मीद नहीं रख सकते। अगर नहीं लगता है तो इसमें किसी का दोष नहीं है, हमारा ही दोष है। कई हैं जो बहुत दिन से कहते हैं कि मेडिटेशन सीख रहे हैं, योग कर रहे हैं लेकिन लग नहीं रहा है। क्यों नहीं लगता?

अन्दर उस बात की कम्पलीट, सहज तरीके से वो धारणा नहीं आयेगी तब तक योग



डॉ. अनुज भाई, दिल्ली

लगाना मुश्किल है। इसलिए शुद्धता और पवित्रता के बिना परमात्मा से जुड़ना आसान नहीं होगा। लेकिन सत्य यही है कि अगर सच में परमात्मा से जुड़ना है और शुद्धता के साथ नहीं रहेंगे, मन अगर साफ नहीं होगा, तन अगर साफ नहीं होगा तो हम वो अनुभव नहीं कर पायेंगे जो हम करना चाहते हैं। ऋषि-मुनि तपस्वी ज़रा आप सोचो शुद्ध और सात्विक होते थे तो उनके वायब्रेशन कितना दूर तक फैलते थे। लोग उनसे जुड़ते थे तो कितना अच्छा महसूस करते थे। जानवर, जंगली जानवर जो इतने हिंसक जानवर होते थे तो भी उनके पास आराम से आकर बैठते थे। तो हमें तो इस समय कहीं जंगल में भी नहीं जाना है, घर में अपने कम्फर्ट से बाहर निकलना है, वो खाना है जो परमात्मा चाहते हैं। अभी तक हम वो खा रहे थे जो हम चाहते थे। तो थोड़ा-सा परिवर्तन करें और परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर उससे शक्तियाँ महसूस करें।

परमात्मा से योग लगाने का आधार

तमोप्रधान प्रकृति की वजह से, सात्विकता ना होने की वजह से हम स्टेबल नहीं हो पाते। या हम एक जगह स्थिर होकर बैठ नहीं पाते। हमारा हाथ, पैर, मुँह हमेशा चलता रहता, हिलता रहता। कभी लेजीनेस होती है, आलस्य आता है, आता ही है क्योंकि आजकल का खान-पान, रहन-सहन ऐसा हो गया है तो परमात्मा का ये भाव है कि जैसे ही खान-पान की शुद्धि होगी, सात्विकता होगी, बिना प्याज़, लहसुन के हम भोजन करते हैं तो उससे हमारे अन्दर एक स्टेबिलिटी (स्थिरता) आती है और उसका साइंटिफिक राज भी है कि जो प्याज़ और लहसुन ये दोनों चीजें

है। अब दूसरों से हम कही-सुनी बातें सुनते हैं, जैसे भी सात्विकता के लिए कहा जाता है कि प्याज़, लहसुन इतना ज़्यादा प्युअर होता तो मन्दिरों में भी हम चढ़ाते, लेकिन हम नवरात्रि के समय भी तो इसको अर्वाइड करते हैं ना! तो इसलिए सात्विकता के आधार से 70 प्रतिशत पवित्रता हमारे अन्दर आती है। शुद्धता आती है, स्टेबिलिटी आती है तो हमारा शरीर स्थिर होता है। और जब शरीर स्थिर होता है, साधन स्थिर होता है तो फिर मन भी बैठता है, मन भी लगता है। क्योंकि जब हमारा हाथ, पैर, मुँह दर्द करेगा तो ध्यान तो वहाँ जायेगा। हम और कुछ

क्योंकि कहीं न कहीं हमारी धारणाओं में कमी है। सबसे पहली धारणा में आता है खान-पान की शुद्धि। उसके बाद संयम, पवित्रता की धारणा। तो ये हमारी दो टाँगें हैं जो बहुत ही मजबूत तरीके से अपनाता है इनको, जो इसपर मजबूती के साथ खड़ा होता है वो ही परमात्मा के साथ खड़ा होता है। नहीं तो आसान नहीं है। भगवान साधारण नहीं है ना! इसलिए साधारण तरीके से उससे मिला भी नहीं जा सकता।

तो एक तो है हमको शुरू में दो, चार, दस दिन के लिए चलो कहा जाता है कि आप योग लगाओ, लेकिन जब तक हमारे

प्रश्न : मेरे पति बहुत शराब पीते थे, और शराब पीने से ही उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन मेरे सास-ससुर ने उनकी मौत का जिम्मेदार मुझे ठहराकर मुझे घर से निकाल दिया। अभी मैं अपने मायके में हूँ। मेरे दो बेटे हैं। एक दसवीं में है और दूसरा छठवीं में। मेरे सास-ससुर उन्हें भी मेरे से मिलने नहीं देते हैं। उन्हें भी मेरे खिलाफ भड़काते हैं कि तुम्हारी माँ ने ही तुम्हारे बाप को मारा है। भगवान जानते हैं कि ये सब झूठ है। मैं अपने बच्चों को पाना चाहती हूँ। ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : ऐसे केस कई जगह होते रहे हैं। सबसे पहले तो मैं शराब पीने वालों को कहना चाहूँगा कि ये विष है इससे बचें, जो लोग छोटी आयु से शराब पीने लग गये वो चालीस साल से ज़्यादा नहीं जी सकते। क्योंकि किसी की किडनी फेल, किसी का लीवर फेल। दोष चाहे किसी को भी दे लेकिन दोष तो उनकी शराब का है, पीने वाले का है। आपके सास-ससुर आपसे पहले से ही नफरत करते होंगे। इसलिए आपके ऊपर दोषारोपण कर दिया। कौन पत्नी अपने पति को इस तरह मारेगी और प्रत्यक्ष है वो बहुत शराब पीता है तो उसकी तो किडनी और लीवर फेल होने ही हैं। उसकी मृत्यु निश्चित है। पाप भी कितनी सूक्ष्म गति से आगे बढ़ रहा है। कई लोग गम के कारण, तनाव के कारण पीते हैं। तनाव के कारण रात को नींद नहीं आती इसलिए भी कई लोगों ने ऐसा करना शुरू किया है। लेकिन इससे समस्याएँ घटती नहीं है बल्कि और बढ़ती हैं। जब शराब पीकर आते हैं तो घर में लड़ाई-झगड़ा करते हैं अशांति और बढ़ती है। गलत व्यसन से कोई टेंशन खत्म नहीं हुआ करती। ये तो मनुष्य अपने को मार रहा है, अपने को सज़ा दे रहा है। इससे वो अपना धन भी नष्ट कर रहे हैं और बच्चों पर भी बुरा असर हो रहा है। वास्तव में इस विष से, इस आसुरी आदत से एक समझदार मनुष्य को हमेशा बचना चाहिए। दूसरी बात यह कि सास-ससुर को भी थोड़ा समझदार होना चाहिए। अपनी बहू से ऐसा दुर्व्यवहार करना, उसे घर से भी निकाल देना, बच्चों

से भी दूर कर देना ये वास्तव में बहुत बड़ा पाप है। और इस पाप का फल उनके सामने आयेगा।

मैं आपको कहना चाहूँगा कि आप राजयोग सीखें। ईश्वरीय ज्ञान लें। कर्मों की गुहा गति जब आपको समझ में आयेगी, तो जीवन में हुई कुछ घटनाओं को एक्सेप्ट कर लेंगी। पति का जाना माना सबसे बड़ा लॉस होता है एक नारी के लिए। अब आप ईश्वरीय ज्ञान लेकर अपने चित्त को प्रसन्न करें और अपने व्यवहार को इतना सुंदर करें कि सास-ससुर भी इससे प्रसन्न हो जायें



राजयोगी ब.कु. सूर्य भाई

और बच्चे भी सास-ससुर को छोड़ आपके पास रहने लगे। लेकिन हम ये भी नहीं कहेंगे कि वो उनको भी पूरा छोड़ दे। क्योंकि उनके साथ भी सहारे वो ही हैं अब। तो आपको राजयोगी बन जाना चाहिए। आपको क्या करना है कि सवेरे उठकर अपने सास-ससुर को बहुत अच्छे वायब्रेशन दें। ताकि उनके विचार बदल जायें, वेस्ट थिंकिंग, निगेटिव थिंकिंग बदल पाँजिटिव हो जाये। ताकि आपस में समझौता हो जाये। रोज सवेरे 5 बजे राजयोग के बहुत अच्छे वायब्रेशन्स आपको अपने सास-ससुर को देने हैं। ताकि उनका चित्त शांत हो जाये क्योंकि वो भी अपने बच्चे की मौत से बहुत परेशान हो, अशांत हों। इसलिए हो सकता है वो बच्चों को अपने सामने रखकर अपने प्यार की तृप्ति करते हों, अपने चित्त को शांत महसूस करते हों। तो राजयोग के अभ्यास से आपकी जो समस्या है वो दूर हो जायेगी।

प्रश्न : पारिवारिक झगड़े के कारण मेरी जेठनी

ने कुछ तंत्र-मंत्र करवाकर मेरे पति और बेटी को मरवा दिया। वो बंटवारे में से ज़मीन का एक टुकड़ा भी हमें नहीं देना चाहती। उन्होंने मुझ पर भी तंत्र-मंत्र का प्रयोग करवाया है जिसके कारण मैं हमेशा बीमार रहती हूँ। कृपया बतायें क्या करूँ?

उत्तर : वास्तव में मुझे ये देखकर कष्ट होता है कि आज नारी, नारी को भी बहुत सता रही है। जबकि नारी में मातृत्व होता है। नारी प्रेम की मूर्ति होती है। मैं कहना चाहूँगा अपनी समस्त मातृ शक्ति को, सारे संसार की मातृ शक्ति को कि जो तंत्र-मंत्र है इससे बचें। क्योंकि हर एक्शन का रिक्शन जरूर होता है। कई लोग लोभवश, स्वार्थवश कि सारी जो सम्पत्ति है मेरे को मिले, मेरे बच्चों को मिले, दूसरे भले ही भूखे रहें, रास्ते पर रहें, भीख मांग कर खायें, मैं उन्हें नष्ट कर डालूँ। नारी का ये कटु स्वभाव हमारे देश के लिए शोभनीय नहीं है। भगवान आकर नारी शक्ति को जगा रहा है कि तुम तो इष्ट देवियाँ हो। तुम्हारी तो पूजा हो रही है। तुम तो सबको देने वाली हो। मैं इन सबको कहूँगा कि दूसरे के धन से कोई भी मनुष्य सुखी नहीं होगा। उनके सामने कर्मों का हिसाब आता है जिन्होंने भी ऐसा किया है वो देखने में आते हैं लास्ट में हॉस्पिटल में पड़े होते हैं। कोई बच्चा उनको पूछने भी नहीं आता। ऐसे केस बहुत आ रहे हैं। मातायें शिकायत करती हैं कि हमारे बच्चे हमें पूछ नहीं रहे। दवाओं का पैसा भी नहीं दे रहे हैं। ये ऐसे ही पाप कर्मों का परिणाम होता है। इसलिए इस कर्म की गति को जानते हुई हमारी मातृ शक्ति को बहुत विशाल दिल होना चाहिए।

आपको क्या करना है, पहले तो आपको अपने चित्त को शांत करना चाहिए और एक बात याद रखनी चाहिए। कोई आपके भाग्य को छीन नहीं सकता। जिन्हें संसार में कोई साथ नहीं देते, उन्हें भगवान साथ देता है। अब आप उससे जुड़ जायें। भाग्य विधाता को अपना बना लें, भाग्य विधाता से योग्युक्त हो जायें तो सम्पूर्ण भाग्य

आपके पास आ जायेगा। इसलिए जिनके साथ पाप हैं उनकी हार निश्चित है जिनके साथ पुण्य और सत्यता है उनकी विजय होगी। इसलिए आपको राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। परमात्म सहारे का अनुभव कर अपने जीवन को ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा खुशियों से भरें और हो सके तो उनको क्षमा भी कर दें। दुआयें दें कि हे प्रभु इनको सदबुद्धि दो, ये भी सुखी रहें। अगर आप क्षमा न कर पायें तो एक घंटा रोज राजयोग मेडिटेशन करें। आपका चित्त शांत होगा। उसे आत्मा देखा करें कि ये मेरी जेठानी नहीं है, ये आत्मा है, ये अपना पार्ट प्ले कर रही है। इसका अपना पार्ट है। मेरा अपना पार्ट है। और जैसे ही आप संकल्प करेंगी कि मुझे इसे दुआयें देनी हैं, तो आपके बहुत सारे संकल्प नहीं चलेंगे। आप पूर्व की घटनायें भूलती जायेंगी, और अपने को आगे बढ़ता हुआ देखेंगी। आपको महसूस होगा कि जिसने हमारे द्वार बंद किये थे, जिसने हमारे जीवन में विघ्न डाले थे, जो हमको पत्थर मारते थे, लेकिन उनके इन कष्टों से हम बहुत आगे बढ़ गये। इसलिए उनको शुक्रिया करें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपको अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

Peace of Mind
CABLE Network
Digital Cable
hathway
SITI
DEN
D.Cable
GTPL
FASTWAY
Dish TV
JioTV
TATA SKY 1065
airtel 678
VIDEOCON 1221
dishTV 1087
TATA SKY 1084
airtel 1060
GTPL 578



जो आपके जीवन को बदल दे



गृहस्थ जीवन सुखमय कैसे हो...!!!



हमारा जीवन बहुत मूल्यवान है। एक-एक संकल्प का जीवन में परम महत्त्व है। जो हमारे सुन्दर जीवन, हमारी सुन्दर पर्सनैलिटी का निर्माण करते हैं। हमें याद रखना है जो संकल्प हम लगातार कर रहे हैं उनसे एनर्जी पैदा होती है, निगेटिव से निगेटिव, पॉजिटिव से पॉजिटिव। और जो बहुत बेकार का सोचते हैं उनसे तो बिल्कुल नष्ट करने वाली, तमोप्रधान एनर्जी पैदा होती है, एकदम काली। ये सब जीवन को, ब्रेन को नष्ट करते हैं। मनुष्य को डिप्रेशन की ओर ले चल रहे हैं आजकल। हमारे चारों ओर का वातावरण वैसा ही बन जाता है। इसलिए अपने संकल्पों को शुद्ध करने का, उन्हें महान बनाने का एक शुद्ध संकल्प कर लें। जीवन महान बन जायेगा। सफलता लक्ष्मी द्वार पर खड़ी रहेगी। आनंद ही आनंद होगा। आज हम चर्चा कर रहे हैं आजकल संबंधों में पति-पत्नी के बीच में सच्चा प्यार कम होता जा रहा है। लोगों ने प्यार और वासना को मिला दिया था, प्यार माना वासनायें, नहीं। एक व्यक्ति बहुत वासनाओं में डूबा रहता है लेकिन प्यार बिल्कुल नहीं रहता है। प्यार एक पवित्र चीज है। प्यार आत्मा की एक मूल क्वालिटी है, और वासनायें तो देह अभिमान है। पतन के गर्त की ओर ले जाने वाली एक बहुत बुरी बीमारी है। पति-पत्नी का ये नाता बहुत शुद्ध, दोनों एक-दूसरे के गुड फ्रेंड, जीवन साथी, ऐसा कहेंगे जीवन की गाड़ी के दो पहिये। एक पहिया बिल्कुल कमजोर या टूटा हुआ, दूसरा पहिया तेज-तर्रार, इगो के कारण कोई भी झुकने को तैयार नहीं रहता। व्यर्थ संकल्पों की बाढ़ आई रहती है। सारा दिन बुरा-बुरा सोचते रहते हैं। एक-दूसरे को नीचा दिखाने का सोचते रहते हैं, बात-बात में एक-दूसरे का अपमान करते रहते हैं। एक-दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुंचाते रहते हैं। कभी पैसे को लेकर झगड़ा, कभी निर्णय को लेकर झगड़ा, पति चाहता है ये काम करूँ, पत्नी कहती है बिल्कुल नहीं। धन भी कहीं न कहीं इस व्यर्थ का, इस टकराव का एक महत्वपूर्ण कारण बन गया है।

जब मनुष्य एक-दूसरे की भावनाओं को सम्मान न देता हो, जब वो एक-दूसरे के विचारों पर विचार न करता हो तब संघर्ष चलता है और घर ही युद्ध का मैदान बन जाता है। मैं सभी स्त्री-पुरुषों को कहूँगा कि आपके हर संकल्प का इफेक्ट आपकी संतति पर हो रहा है। चारों ओर वातावरण में हो रहा है। आप ये भोजन बना रही हैं, खिला रही हैं उस पर हो रहा है। इसलिए अपने को सम्भालेंगे। बातें बहुत छोटी हैं लेकिन हमारा स्नेह का नाता बहुत बड़ा है। इगो एक बहुत बड़ी बुराई है। संबंधों का रस जीवन सुखी बनाने वाला है, अपने इगो को डाउन करें। दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं रहता। तो एक निगेटिविटी घर में बनी ही रहती है, लेकिन पहले तो मैं सभी की भारतीय परम्परा की याद दिलाऊँ। मात्र शक्ति को अपनी विशेषताओं को जानना चाहिए। मात्र शक्ति सहनशील होती है, महान होती है, अपेक्षाकृत,

बातें बहुत छोटी हैं लेकिन हमारा स्नेह का नाता बहुत बड़ा है। इगो एक बहुत बड़ी बुराई है। संबंधों का रस जीवन सुखी बनाने वाला है, अपने इगो को डाउन करें।

अधिकृत, नम्रचित्त होती है। पर हमारी एजुकेशन ने दो चीजें बहुत बढ़ा दी हैं। नारी शक्ति में धन की लालसा और इगो, यानी अहम। जबकि शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य को नम्रचित्त, विनयी होना चाहिए। विनयी उसके जीवन की सुन्दरता होनी चाहिए। ये इगो टकराता है तो मुश्किलता हो जाती है, और सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है, चाहे आप छुपकर भी लड़ते हों। बच्चे स्कूल गये हैं तब आपकी लड़ाई हो रही है तो भी वायब्रेशन का इफेक्ट बच्चे पर पड़ेगा और जहाँ वो बैठे होंगे या स्कूल में पढ़ रहे होंगे तो आपकी यहाँ घर में लड़ाई हो गई वहाँ आपके बच्चों का मन उदास हो जायेगा। इसलिए दो बुद्धिमानों में एक को तो समझदार होना ही पड़ेगा। होना तो चाहिए दोनों को। और अगर मात्र शक्ति समझदार हो, है, होती है

अनेकानेक केसेज में मातायें खुद कहती हैं कि हमें अपने घर को तोड़ना नहीं है, हमें अपने घर का वातावरण भारी, निगेटिविटी से भरा हुआ नहीं बनाना है। मैं सबकुछ करूँगी। एक रहस्य ये भी जान लें सभी। यदि बहनें अपने इगो को डाउन करेंगी तो पुरुष का भी इगो डाउन होगा। लेकिन सदैव चुप रहना कल्याणकारी नहीं होता है। दूसरा व्यक्ति बहुत कुछ बोल रहा है, थोड़ा जब वो शांत हो जाये एक-दो अच्छी बात सुना दो, उनके ही उत्तर में। तुरंत अगर प्रतिउत्तर चालू कर दिया तो झगड़ा होगा, इगो बढ़ जायेगा, टकराव बढ़ जायेगा। इसलिए समझदार को झुक कर चलना है और याद रखेंगे भगवान के महावाक्य, जो झुककर चलता है वो ही तो महान है, जो झुककर चलता है वो ही ऊपर उठा सकता है। आपको अपने बच्चे को गोद में लेना है तो झुकना तो पड़ेगा ही ना! या बिना झुके ही गोद में उठा लेंगी! झुकना सीखें, विचार सुन्दर रहेंगे।

विचारों का टकराव सचमुच जीवन को क्या कहुँ, दुर्गति में ले जा रहा है। कोई बहन कह रही थी कि मेरा पति तो मेरा गला पकड़ लेता है और दबाने को तैयार हो जाता है। फिर उसे रियलाइज होता है कि मैं ये क्या कर रहा हूँ, अगर मैंने गला दबा दिया तो फिर क्या होगा! पुलिस, जेल, बदनामी, जीवन नष्ट, भ्रष्ट, बच्चे बिखर जायेंगे। फिर दो-चार दिन के बाद वही गुस्सा फिर से आता है, फिर वही करता है। इसलिए दोनों, मैं कोई मात्र शक्ति का फेवर नहीं ले रहा हूँ, कहीं-कहीं मातायें भी बहुत तेज-तर्रार होती हैं। दोनों आपस में प्यार को बढ़ायें, अंडरस्टैंडिंग को बढ़ायें, और अगर एक चीज आप कर लें अच्छा मूड हो ना तो शांत में बैठकर विचार-विमर्श करें। अपने जीवन को कैसे चलाना है, मुझे क्या छोड़ना है, तुम्हें क्या छोड़ना है। हरेक व्यक्ति अपने को चेंज करने का संकल्प करें। तो आपके संकल्प भी सुन्दर होंगे, आपके परिवार का माहौल भी बहुत अच्छा होगा। आपके बच्चों की पालना बहुत अच्छी कर सकेंगे नहीं तो उलझनों में क्या पालना होगी, क्या प्यार दिया जायेगा उनको। और आपका जीवन मन्दिर, परिवार मन्दिर बन जायेगा। मेरी शुभ भावनायें हैं गृहस्थ में रहने वाले सभी भाई-बहनें बहुत सुखी हो जायें। एक-दूसरे को समझकर बिल्कुल दो नहीं एक होकर आगे चलें। और अपने-अपने घरों को स्वर्ग जैसा महान तीर्थ बनायें।



फतेहाबाद-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी व ब्र.कु. हंसा बहन का अशोक नगर के ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में बन रहे म्यूजियम व म्यूजियम पार्क का अवलोकन करने आने पर फूलों का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.मोहिनी बहन तथा अन्य ब्र.कु.भाई-बहनें।



मलेशिया-जोहर बहुरू। पैरागॉन होटल में ब्रह्माकुमारीज द्वारा ईश्वरीय सेवाओं के 40वें वार्षिकोत्सव पर आई.पी.एस. एवं वी.आई.पी.जे. के लिए 'हाओ आई सी द वर्ल्ड अराउंड मी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दातो सुगुमरण रमन, रिटा. सीनियर असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ रॉयल मलेशिया पुलिस एंड करंटली चेरमैन फॉर यायासन सुल्तान रोगया एंड पर्सनल ऑफिसर टू हिज मजेस्टी सुल्तान ऑफ जोहर, बीकेएम प्रेसिडेंट जोशी राजा, जोसेफिन येव, ज्वेल बिफ्रेडर्स, लाफ्टर योगा एंड द कैथोलिक चर्च, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीरा दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग। इस मौके पर ब्र.कु. सुलक्षिणी बहन एवं ब्र.कु. दिशा बहन एवं रवांग की टीम द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई।



निम्बाहेडा-राज। उपकाराग्रह में बंदिस्त कैदियों को 'अपराधमुक्त जीवन' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में कार्यवाहक जेलर जगदीश प्रसाद, ब्र.कु. भगवान भाई, मा.आबू, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवली बहन सहित उपकाराग्रह स्टाफ तथा अन्य।



बिहार शरीफ-नालंदा(बिहार)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.अनुपमा बहन, ब्र.कु. रिमझिम बहन तथा अन्य भाई-बहनों सहित किसान भाई।



विजयवाड़ा-अमरावती(आंध्र प्रदेश)। ब्रह्माकुमारीज के यूनिवर्सल पीस रिट्रीट सेंटर में 'आध्यात्मिक जीवन शैली' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एल. डोलाशंकर, एल.आई.डी.सी.पी. इंडस्ट्री चेरमैन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.शांता दीदी, ब्र.कु. सुप्रिया बहन, माउण्ट आबू, ब्र.कु. भारती बहन, ब्र.कु. रामकृष्ण, हैदराबाद सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



रमाला-उ.प्र.। सहकारी चीनी मिल के प्रधान प्रबंधक को ईश्वरीय सौगात और ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.बांवी, मा.आबू।



सातारा-जकातवाडी(महा.)। डॉक्टर्स डे के अवसर पर डॉ. अभिषेक सुरेश महाजन, अस्थिरोग विशेषज्ञ को ईश्वरीय सौगात व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन।



समस्तीपुर-शाहपुर पटोरी(बिहार)। एसडीओ मो. जफर आलम को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट कर नव वर्ष की शुभकामनायें देते हुए ब्र.कु. रंजना बहन।



बेतिया-बिहार। नगर निगम की नवनिर्वाचित मेयर गरिमा देवी सिकारिया को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.अंजना बहन।



छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। कोचिंग ए+ द्वारा एनुअल फंक्शन के अवसर पर आमंत्रित मुख्य अतिथि ब्र.कु.रीना बहन व ब्र.कु.भारती बहन का स्वागत करते हुए कोचिंग डायरेक्टर उर्मिला शुक्ला। कार्यक्रम में उपस्थित रहे जनपद पंचायत अध्यक्ष विद्या जी तथा अन्य।



झज्जर-हरियाणा। हरियाणा राज्य परिवहन कर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल डॉ. डी.पी. वल्लभ को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.भूप सिंह काकरान।

‘आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन’ विषय पर माननीय मुख्यमंत्री खट्टर ने कहा ब्रह्माकुमारीज़ संस्था दैवी संस्कृति को बढ़ा रही आगे



शांतिवन। सिर्फ भौतिक विकास को हम विकास नहीं कहेंगे। इसके साथ-साथ हमें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर देना होगा। हमें भौतिक विकास का सुख चाहिए तो आध्यात्मिक विकास ज़रूरी है। मनुष्य में संस्कार निर्माण कैसे हो, आध्यात्मिक स्तर कैसे ऊँचा उठाया जाए, इस पर ध्यान देना होगा। जो समाज में नशाखोरी, गलत आदतें, तनाव जैसी व्याधियाँ हैं उसे कैसे समाप्त किया जाए, इस पर हमें आगे आकर कार्य करना होगा। इस कार्य में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान लगा हुआ है। उक्त उद्गार हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय के शांतिवन परिसर स्थित डायमण्ड हॉल में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यक्त किए। ‘आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन’ विषय पर संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अच्छे कार्य करने में हमें तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन कभी अपने में निराशा नहीं आने दे। हमेशा आशावादी बनकर आगे बढ़ना है।

ब्रह्माकुमारीज़ एक लक्ष्य को लेकर आध्यात्मिकता के माध्यम से दैवी शक्तियों की रेखा को लंबा कर रही हैं। हम देखेंगे आगे चलकर, इसका प्रभाव बढ़ेगा तो समाज सुखी होगा। फिर से हम जिस स्वर्ग की कल्पना कर रहे हैं वह आने वाला है। मुख्यमंत्री खट्टर ने कहा कि संस्कार केवल शिक्षा से नहीं आएगा।



इसके लिए हमें अलग से पाठ्यक्रम शुरू करना होगा। हरियाणा सरकार ने शिक्षा में गीता के उपदेशों और जीवन जीने की कला की बातों को शामिल किया है, जिसे आज देश ही नहीं दुनिया भी स्वीकार कर रही है। अंतर्राष्ट्रीय गीता

हरियाणा शिक्षा में गीता के उपदेशों को शामिल करने वाला पहला राज्य बना

भौतिक विकास के साथ मानसिक बौद्धिक विकास होना ज़रूरी

जयंती के कार्यक्रमों को सरकार की ओर से प्रत्येक जिला स्तर पर आयोजित कराए गए हैं। हरियाणा करनाल के सांसद संजय भाटिया ने भी अपने विचार रखे। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता में प्योरिटी की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। संस्थान के कार्यकारी सचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि हरियाणा पूरे विश्व को गीता का ज्ञान देने के निमित्त बना और गीता को विश्व व्यापक बनाया। इस दौरान संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि हरियाणा खेल के लिए प्रसिद्ध है। इसे प्रोत्साहित करने के लिए सरकार का बहुत योगदान है। ज्ञानमानसरोवर, पानीपत के डायरेक्टर ब्र.कु. भारत भूषण भाई ने स्वागत किया। संचालन वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शिवानी बहन ने किया। आभार ब्र.कु. मेहरचंद ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने मुख्यमंत्री को शॉल और परमात्मा का स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इसके पश्चात् वह संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी की स्मृति में बने ‘अव्यक्त लोक’ में पहुंचे और अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे सेवाकार्यों की सराहना भी की।

व्यसनमुक्त होकर विश्वगुरु कहलायेगा भारत - राज्यपाल

नीलबड़-भोपाल(म.प्र.)। किसी का व्यसन छुड़ाना यह बहुत बड़ा पुण्य का काम है। जिसका व्यसन आप छुड़ायेंगे वह जीवन भर आपको याद रखेगा, दुआएं देगा। व्यसन से कई परिवार बर्बाद हो रहे हैं। व्यसन से अगर घर का मुखिया असमय मर जाता है तो सारा परिवार ध्वस्त हो जाता है। इसलिए मैं आप सभी को



बहुत साधुवाद देता हूँ क्योंकि आपने बहुत बड़ा समाज सुधार का काम अपने ऊपर लिया है। यह केवल शासन या ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के द्वारा नहीं, लेकिन इसमें सभी का प्रयास आवश्यक है। तभी हम सब मिलकर मध्य प्रदेश को व्यसन मुक्त मध्य प्रदेश बना सकेंगे। यह कहना था माननीय राज्यपाल मंगू भाई पटेल का। और अवसर था ब्रह्माकुमारीज़, सुखशांति भवन, नीलबड़ के अनुभूति सभागार में आयोजित ‘मेरा मध्य प्रदेश व्यसन मुक्त मध्य प्रदेश’ अभियान के उद्घाटन का। आगे आपने बताया कि आत्मिक सुख और शांति अच्छे संस्कारों से मिलती है। ऐसे ही संस्कारों के निर्माण का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ संस्था कर रही है। समाज सुधार से ही देश में सुधार होगा और भारत विश्व गुरु कहलायेगा। मुंबई से आये सुप्रसिद्ध व्यसनमुक्ति विशेषज्ञ डॉ. सचिन परब ने मुख्य वक्ता के रूप में व्यसनमुक्ति के क्षेत्र में 25 वर्षों से किए हुए जमीनी कार्य का ब्यौरा प्रस्तुत किया। माउण्ट आबू से आये ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने मध्य प्रदेश को नशा मुक्त कैसे किया जा सकता है इस विषय पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के प्रारंभ में ब्रह्माकुमारीज़ भोपाल ज़ोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने शब्द सुमनों द्वारा स्वागत किया। ब्रह्माकुमारीज़, सुख शांति भवन, नीलबड़ की डायरेक्टर ब्र.कु. नीता दीदी ने हृदय से आभार व्यक्त किया।

गुवाहाटी में प्रशासक वर्ग के सम्मेलन का सफल आयोजन

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रशासन में आती उत्कृष्टता

गुवाहाटी-असम। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा विश्व शांति भवन में प्रशासक सम्मेलन के अंतर्गत ‘एक्सिलेंस इन एडमिनिस्ट्रेशन थ्रू स्पीरिचुअलिटी’ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि असम सरकार के मुख्य सचिव पवन कुमार बोरठाकुर ने कहा कि प्रशासकीय क्षेत्र में लिए गए निर्णय का आमजन पर बहुत असर होता है। जिम्मेवारी के साथ त्वरित निर्णय लिए जाने से,

से सम्पन्न बना सकते हैं। उ.प्र. सरकार के पूर्व सचिव सीताराम मीणा, आईएएस ने कहा कि लंबे प्रशासनिक कार्यकाल के दौरान राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से स्वयं का आंतरिक सशक्तिकरण होता है और मन की सोच-विचार की शक्ति व्यापक होती है। सिरसा हरियाणा से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. बिंदु दीदी ने राजयोग मेडिटेशन की विधि बताते हुए इसका क्रियात्मक अभ्यास करवाया।



नियमों एवं मर्यादाओं का पालन करते हुए निर्णय लेने से बहुतों का हित होता है। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, दिल्ली ने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने से प्रशासन में उत्कृष्टता आती है। हम पहले स्व के शासक बनें। अपने मन में निहित खुद की शक्तियों के खजाने को पहचानें और व्यापक जनहित में कल्याणकारी और पारदर्शी निर्णय लें तो समाज में लोगों का जीवन शांति और खुशी

माउण्ट आबू से आये प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश ने प्रभाग द्वारा हो रही सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी। दिल्ली ओ.आर.सी. से ब्र.कु. विधात्री बहन ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का परिचय दिया। ब्रह्माकुमारीज़ नलबाड़ी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जोनाली बहन ने आभार व्यक्त किया। ओआरसी दिल्ली से ब्र.कु. हुसैन बहन ने संचालन किया एवं ब्र.कु. मौसमी बहन ने स्वागत किया। इस अवसर पर करीब 300 प्रशासक उपस्थित रहे।

21 बहनों का भव्य अलौकिक समर्पण समारोह



जयपुर-राजापारक। ब्रह्माकुमारीज़ सबजोन की ओर से जयपुर स्थित एंटरटेनमेंट पैराडाइज़, जवाहर सर्किल में 21 बहनों के ईश्वरीय सेवार्थ अलौकिक समर्पण समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर राज्यमंत्री, राजस्थान समाज कल्याण विभाग की अध्यक्ष डॉ. अर्चना शर्मा ने कहा कि जो अध्यात्म से जुड़ते हैं वह सांसारिक जीवन की दुविधाओं से बाहर हो जाते हैं। राजनीति में नेता भी सफेद कपड़े पहनते हैं लेकिन आप जो सफेद वस्त्र धारण करते हैं उनमें और आप में बहुत अंतर है और यही कारण है कि आपकी विश्वसनीयता इस सांसारिक जीवन में बहुत बड़ी है। ब्रह्माकुमारीज़ दिल्ली शक्ति नगर सबजोन ईचाज एवं रशिया डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि बहनों

को इस समर्पण समारोह से पूर्व 5 वर्ष ट्रेनिंग के लिए दिए जाते हैं ताकि वे और उनके लौकिक परिवार ये देख सकें कि

समर्पित होने वाली बहनों के परिवार सहित शहर के सात हजार प्रबुद्धजन अलौकिक समारोह के बने साक्षी

21 बहनों ने विश्व परिवर्तन के भगीरथ कार्य में समर्पित होने के नियम व मर्यादाओं की ली प्रतिज्ञा

इस मार्ग पर ये चल सकती हैं या नहीं। जब सबकी तरफ से यह सर्टिफिकेट मिलता है कि सफल होंगे तभी इनका समर्पण समारोह किया जाता है। आज भारत की प्राचीन संस्कृति जो भारत को

एक विश्व गुरु कहलवाती थी, आज उस प्राचीन संस्कृति को पुनः इस विश्व में लाने के लिए इन बहनों ने अपने जीवन का त्याग किया है और इस देश को श्रेष्ठ बनाने के लिए विकारों रूपी दुर्गुणों से स्वयं को मुक्त कर अनेकों को मुक्ति प्राप्त कराने के लिए अपना जीवन प्रभु अर्पित किया है, जो बहुत बड़ा कार्य है। जयपुर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी ने कहा कि इस अलौकिक समर्पण का मर्म है कि ब्रह्माकुमारी बहनें अपना जीवन परमपिता परमात्मा शिव को साथी मानकर उन्हें अर्पित करती हैं। इस मौके पर कमल सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निर्मला दीदी, जोधपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. फूल बहन व ब्र.कु. शील बहन ने अपनी शुभकामनाएं दी।